मानस के अनुष्ठान एवं हनुमत् उपासना

हनुमद्धाम

में हनुमदीश्वर श्री राम मन्दिर

श्री राम चरित मानस एहि नामा। सुनत श्रवन पाइहि विश्रामा॥
मन कामना सिद्धि नर पावा। जे यह कथा कपट तजि गावा॥

लेखक : गोलोकवासी श्री सुदर्शन सिंह "चक्र"

गोलोकवासी चक्र जी महाराज

अध्यात्म जगत् की विभूति, भारतीय संस्कृति के प्रणेता, नवीन परिवेश में सदाचार एवं नैतिक मूल्यों के प्रतिष्ठापक साहित्य-साधना से दिग् भ्रान्त मानव आज के आलोक वाही पथ प्रदर्शक साहित्यकार एवं बहु आयामी प्रतिभा के धनी महान तत्व चिन्तक के रूप में **श्री सुदर्शन सिंह 'चक्र' जी** का नाम भारत में कौन नहीं जानता?

प्रेम लक्षणा पराभक्ति के अन्तर्गत सम्बन्धात्मक धारणा का आश्रय कर अनिकेत, अपरिग्रही व सरल-स्वभावी सन्त **"श्री सुदर्शन सिंह चक्र" श्री आंजनेय** को अपना अग्रज व **श्रीकृष्ण-कन्हाई** को प्रिय अनुज मानते थे। आप गीता प्रेस गोरखपुर की **"कल्याण"** के मनस्वी कहानीकार तथा मथुरा से प्रकाशित **"श्रीकृष्ण सन्देश"** पत्रिका के यशस्वी सम्पादक थे। शुकतीर्थ में हनुमद्धाम की संस्थापना भी आपकी ही कृपा का फल है। इन्होंने अपने जीवन में अनेकों पुस्तकें विलक्षण शैली में लिखी है। जो आध्यात्मिक ज्ञान में मणि के रूप में विख्यात है। इनकी ही **'मानस के अनुष्ठान'** सद्य-फल-प्रदाता एवम भक्तों की कामना पूर्ति करने वाली पुस्तिका है। मानस पाठ के सभी अधिकारी है। इनकी याचना भी विलक्षण ही थी।

माँगूगा न मुक्ति-भुक्ति माँगूगा न भोग-योग,
देना मुझे कसक भरी पीड़ा का व्यवहार।
करना मत किसी की कृपा का पात्र, तुम्हें छोड,
देना मत किसी की प्रशंसा का व्यर्थ भार।

मानस के अनुष्ठान
एवं
हनुमत् उपासना

हनुमद्धाम
में हनुमदीश्वर श्री राम मन्दिर

लेखक

गोलोकवासी श्री सुदर्शन सिंह ''चक्र''

प्रकाशन :

हनुमद्धाम (श्रीराम आध्यात्मिक प्रन्यास)
शुकतीर्थ जि0 मुजफ्फरनगर (उ0प्र0)-251316

प्रथम संस्करण : 5000, (श्री हनुमत जयंती, 2002)
द्वितीय संस्करण : 2000 (नवरात्र उत्सव 2015)

मूल्य : 35/-

टंकणक - महामृत्युजंय मिशन, मो0 - 9927790456,
मुद्रक : ईशान प्रिंट सलूशन, मो0 - 9358919245

Cover page by
dreamshapers 9897035745

श्री सुदर्शन सिंह चक्र

हनुमद्धाम के संस्थापक, उन्नायक और निर्देशक श्री सुदर्शन सिंह 'चक्र' जी का जन्म सकलडीहा रेलवे स्टेशन से 6 कि.मी. दूरी पर स्थित भेलहटा ग्राम, चन्दौली तहसील, वाराणसी जिला, (उ0प्र0) मे क्षत्रीय (रघुवंशीय) परिवार में दिनांक 14 नवम्बर सन् 1911 (कार्तिक शुक्ल गोपाष्टमी) को हुआ था। आपको हिन्दी, संस्कृत, गुजराती और बंगला भाषा का उत्कृष्ट ज्ञान था। जन्मजात अक्खड़ स्वभाव और फक्कड़ व्यक्तित्व ने इन्हें अनिकेत, अपरिग्रही, एकान्तप्रिय एवं जगत् से निरपेक्ष बना दिया। इन्हीं दिनों देश में गाँधी जी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम की लहर चरमोत्कर्ष पर थी, देश प्रेम की पुनीत भावना से प्रभावित नवयुवक चक्रजी का मानस उद्वेलित हो उठा और स्वाधीनता के असहयोग आन्दोलन में खुलकर भाग लेने लगे। इस क्रम में कई बार जेल भी जाना पड़ा। 1933

में गाँधी-इर्विन समझौते के समय जूनागढ़ शिविर में मंत्री रूप में जब आप पं० शान्तनुबिहारी द्विवेदी (संन्यास के बाद अनन्त श्री स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती) से अनन्य मित्रता की डोर में बँधे कि राष्ट्र भक्ति भगवद् भक्ति में परिवर्तित हो गई। 1936 में आप वृन्दावन आकर भगवद्साधना करने लगे। 1937 से 1941 तक मेरठ की पत्रिका 'संकीर्तन' का सम्पादन किया। फिर 'मानसमणि' रामवन सतना (म०प्र०) के सम्पादक के साथ-साथ गीताप्रेस, गोरखपुर की प्रमुख पत्रिका 'कल्याण' के यशस्वी सम्पादक श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार ने कल्याण के कई विशेषांक के सम्पादक में श्री सुदर्शनसिंह का सहयोग लिया, जिनमें कुछ हैं - नारी अंक, हिन्दू-संस्कृति अंक, भक्त चरितांक, बालकांक सन्तवाणी अंक, सत्कथा-अंक, तीर्थांक, मानवता-अंक, भगवन्नाम-महिमांक, प्रार्थना अंक, धर्मांक, श्रीरामवचनामृतांक इत्यादि। कल्याण के मासिक अंकों में आपकी लिखी कहानी नियमित छपती थी जिसमें लेखक के नाम में केवल 'चक्र' लिखा होता था। आप जीवन पर्यन्त आध्यात्मिक ग्रन्थों के लेखन में व्यस्त रहे। पौराणिक उपन्यास लेखन में आप सिद्धहस्त थे। जितनी अधिक संख्या में आपने हिन्दी में पौराणिक उपन्यास लिखे हैं, इतनी संख्या में और किसी ने नहीं लिखा है। आप द्वारा लिखी गई पुस्तकों में प्रमुख हैं - जरठ जटायु, महात्मा बाली, श्रीरामचरित-मानस में विवेकी विभीषण, श्रीरामचरितमानस में सुमंत्र, श्री भगवन्नाम संकीर्तन, दिव्य दशमी, मानस-मंदाकिनी (तीन खण्डों में), विधाता विश्वामित्र, ब्रह्मर्षि वशिष्ठ, श्री हनुमान चरित्र, देवर्षि नारद, शत्रुघ्न कुमार की आत्मकथा, माता सुमित्रा, रामवन, नव-निर्झरिणी, अष्टदल, नूतन-नवरत्न, जीवन निर्माण, प्रभु आवत, मानस के अनुष्ठान, राक्षस राज, साधन सोपान, मानस के मंगलाचरण, भगवान् वासुदेव, श्री द्वारिकाधीश, पार्थसारथि, नन्दनन्दन, आंजनेय की आत्मकथा, हमारी संस्कृति, राम-श्याम की झाँकी (दो खण्डों में), सखाओं के कन्हैया, श्याम का स्वभाव, हमारे धर्मग्रन्थ, कर्म

रहस्य, साध्य और साधन, कन्हाई, शिव चरित्र, मजेदार कहानियाँ, कल्कि-अवतार या कलयुग का अन्त, भगवान् वामन, गोलोक-एक परिवार, श्री कृष्ण सर्वरूप, उन्मादिनी यशोदा, शिव स्मरण, हमारे अवतार एवं देवी-देवता, हिन्दुओं के तीर्थ स्थान, ज्ञान गंगा, भक्ति भागीरथी, नवधा भक्ति, दस महाव्रत, सांस्कृतिक कहानियाँ (12 खण्डों में), प्रेरक प्रसंग, मधु बिन्दु और ज्योति कण, पंचगीत, पुराण-विज्ञान और रहस्य, रामचरित-मानस में पंचायती राज, वीणा के तार, पर्वोत्सव विवरण, अमृत पत्र, पलक झपकते ही वे मिलेंगे, श्री रामचरित (चार खण्डों में), स्वजनों की दृष्टि में बालकृष्ण आपकी चर्चा, शत्रुघ्न कुमार की आत्मकथा इत्यादि। आपने निम्न पुस्तकों का भी सम्पादन किया है- हरि लीला, भागवत् परिचय, श्रीमद्‌भागवत महापुराण (पदच्छेद, अन्वय एवं हिन्दी शब्दार्थ टीका सहित)।

निरन्तर सत्साहित्य साधना मे रत रहने वाले श्रीचक्र जी ने सर्वदा शास्त्रीय सिद्धान्तों को ही सर्वोच्च माना। आप अध्यात्म ज्ञान के मणी के रूप में लब्धप्रतिष्ठित होते हुए भी होम्योपैथ, आयुर्वेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा के अच्छे जानकार थे। श्रीचक्र जी ज्योतिष के भी अप्रतिम मर्मज्ञ थे।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी श्रीचक्र जी ने दिनाङ्क 25 सितम्बर, सन् 1989 एकादशी तिथि को गोलोक धाम की ओर प्रयाण किया।

पाँचभौतिक शरीर के द्वारा हमसे परोक्ष होने पर भी उनकी कृपा प्रत्यक्ष रूप से हनुमद्धाम के विकास में सम्बल है। उनकी अन्तःस्थ कल्पना से प्रकटित साहित्य-सरिता निरन्तर इस महापुरूष (श्री चक्र जी) का यशोगान करती हुई प्रवाहित होती रहेगी।

हनुमद्धाम

परिचय

जिस प्रकार नदियों में गंगा, देवताओं में विष्णु और वैष्णवों में भगवान शंकर सबसे उत्तम हैं, वैसे ही पुराणों में श्रीमद्‌भागवत पुराण सर्वश्रेष्ठ है। यह पुराण दोषरहित अत्यन्त निर्मल ग्रन्थ है। इसमें जीवन्मुक्त परमहंसों के सर्वोत्तम, अद्वितीय एवं विशुद्ध ज्ञान का वर्णन किया गया है।

शुकतीर्थ वही पावन स्थान है जहाँ शुकदेवजी के मुख के नि:सृत श्रीमद्‌भागवत कथा मानव के तीनों भव-तापों के शमन के लिए घोषणा कर रही है-

श्री शुक मुनि भागवत कहि लीनों जगत उबार।
नहि अब लौं भवसिंधु में, डूबि जान संसार।।

मुजफ्फरनगर जनपद से 29 कि.मी. दूर माँ भागीरथी गंगा के तट पर स्थित शुकतीर्थ उत्तर भारत का अत्यंत पौराणिक, धार्मिक तथा सुरम्य तीर्थ स्थल है। इसका अन्य पुराणों एवं श्री मद्‌भागवत् महापुराण में आनन्दवन नाम से भी वर्णन मिलता है इस को ही शुकतार अथवा शुकताल या शुक्रताल कहते हैं। मुजफ्फरनगर से यहाँ तक बस, टैम्पो इत्यादि द्वारा पहुँचा जा सकता है। श्री शुकदेव जी ने यहीं महाराज परीक्षित को श्रीमद्‌भागवत सुनाई थी। यह भूमि श्रीमद्‌भागवत की उद्‌गम-स्थली रही है। यहाँ के तपोमय सात्विक वातावरण से मुग्ध होकर ही श्री चक्र जी महाराज ने इसे श्रद्धालुओं का श्रद्धा केन्द्र जानकर इसी शुकतीर्थ को हनुमद्धाम के निर्माण के लिए चुना।

मानस के अनुष्ठान

श्री रामचरित मानस सर्वकामप्रद ग्रन्थ है और उसके दोहे, सोरठे, छन्द सिद्ध मन्त्र हैं, यह बात दीर्घकाल से सत्पुरूष मानते चले आ रहे हैं और लोगों का अनुभव भी यही है। बहुत से लोगों ने 'मानस' के अनुष्ठान से लाभ उठाया है। इसलिये यहाँ कुछ अत्यन्त अनुभूत सफल प्रयोग दिये जा रहे हैं। इनके लिये हवन आवश्यक है।

आप निम्न सामग्री बताये अनुसार तैयार करें। 1. चावल 2. चावल के वजन से दुगुना जौ और 3. जौ से वजन में दुगुने तिल। चावल और तिल से कचड़ा निकाल कर साफ कर, इन्हें धोकर सुखा लें। जौ को भी कचड़ा कंकड़ निकाल कर साफ कर लें। यदि यह तीनों सामग्री मिलाकर सवा सेर होती है तो उसमें एक छटाँक चन्दन का बुरादा, दो छटाँक देशी शक्कर, दो छटाँक पंच मेवा, एक छटाँक गुग्गुल, एक छटाँक 'सर्वगन्ध चूर्ण' (यह मिला हुआ पंसारी से मिलता है) और सब सामग्री ठीक-ठीक भीग जाये, इतना घी मिला लीजिये। घी शुद्ध हो यह अवश्य ध्यान रखने की बात है। किसी प्रकार के हवन के लिये यह उत्तम सामग्री है।

जब आपको हवन करना हो तो किसी कर्मकाण्ड कराने वाले ब्राह्मण की सहायता अवश्य ले लें, क्योंकि हवन एक वैदिक शास्त्रीय कर्म है। उसमें छोटी-छोटी बातें बहुत हैं, जैसे वेदी पर अग्न्याधान की विधि, हवन के लिये स्रुवा बनाना आदि। सब बातें लेख में लिखने से तो 'हवन विधि' पुस्तक आप कहीं से ले लें, यह उत्तम होगा। लेकिन सबसे उत्तम यही है कि किसी जानकार ब्राह्मण की सहायता आप लें।

हवन के लिये गणपति पूजन आवश्यक है। छोटे हवन में कलशस्थापन, कुशकण्डिका, मातृ का नवग्रह पूजन तथा अन्त में तर्पण-मार्जन आवश्यक नहीं होता है। लेकिन पूरी विधि की जाये तो उत्तम तो होता ही है।

श्रीरामचरित मानस का अनुष्ठान पाठ प्रधान है। इसमें हवन की अनिवार्यता नहीं है। केवल तब जबकि आप पाठ न करके किसी एक चौपाई का ही आश्रय लेते हैं, तब हवन करने की आवश्यकता होती है और मैं यह सर्वथा स्पष्ट कह दूँ कि 'मानस' के अनुष्ठान में इस प्रकार एक ही चौपाई को हवन के द्वारा सिद्ध करके जपने की परिपाटी प्राचीन नहीं है। इससे लाभ होगा ही, यह बात संदिग्ध रहेगी। पुरानी परिपाटी मानस-अनुष्ठन की सम्पुट तथा सम्पुट बल्ली पाठ की है।

आवश्यक निर्देश

(क) 'मानस' के पाठ के सब अधिकारी हैं। सब वर्णों के, सब आश्रमों के, सभी आयु के स्त्री-पुरूष सब पाठ कर सकते हैं। कोई अहिन्दू सज्जन चाहें तो वे भी पाठ या अनुष्ठन करके लाभ उठा सकते हैं।

(ख) यदि आप पाठ करते हैं तो यह नित्य का पाठ किसी भी कारण से बन्द नहीं करना चाहिए। कोई घर-परिवार में मरे या पैदा हो, पाठ बन्द नहीं होगा, लेकिन यह बात नित्य के निष्काम पाठ के लिये ही है। किसी कामना की पूर्ति के लिये पाठ करना हो तो मृत या जात सूतक में मृत्यु अथवा बच्चे के उत्पन्न होने के बारह दिन बाद तक सकाम पाठ नहीं होगा। स्त्रियां रजोधर्म की अवस्था में भी पाठ कर सकती है। लेकिन सकाम अनुष्ठान उन दिनों नहीं चल सकता।

(ग) सकाम पाठ शुद्ध आसन पर बैठकर दिन या रात्रि में चाहे जब किया जा सकता है। हाथ पैर धोकर, शुद्ध वस्त्र पहन कर पाठ करना चाहिये। चलते-फिरते सकाम पाठ नहीं किया जा सकता। रोगी व्यक्ति जो बैठने में असमर्थ हैं, वे लेटे-लेटे पाठ कर सकते हैं। असमर्थ के लिये शुद्धता का भी नियम अनिवार्य नहीं है।

(घ) यह आवश्यक नहीं है कि नवाह्न पाठ एक ही समय पूरा कर दिया जाये। उसे आप दो बार में पूरा कर सकते हैं। लेकिन ठीक दोपहर अथवा अर्धरात्रि के समय एक घंटा पाठ के लिये वर्जित काल हैं।

(ङ) सकाम अनुष्ठान के दिनों में सबके लिए ब्रह्मचर्य का पालन माँस-मदिरा का त्याग आवश्यक है।

(च) पाठ किसी भी शान्त शुद्ध स्थान पर किया जा सकता है। लेकिन शंकर जी या हनुमान जी के मन्दिर में उनके श्री विग्रह के सामने पाठ करना, पीपल, वेल वा आंवले के नीचे पाठ करना अथवा तुलसी के पौधे के समीप पाठ करना अधिक फलप्रद है।

(छ) पाठ किसी शुभ तिथि को प्रारम्भ करना चाहिये। पाठ के लिये दोनों खरमास वर्जित हैं। गुरू या शुक्र का अस्त काल भी पाठ करने के लिये उत्तम नहीं हैं। लेकिन पहले से जो पाठ प्रारम्भ हो गये हैं, उनके लिये इस समय का दोष नहीं होता। किसी भी विद्वान ब्राह्मण से पूछ लेने पर शुभ समय का सरलता से पता लग जाता है।

(ज) अनुष्ठान पूरा होने पर हवन तर्पण- मार्जन तथा ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये। नियम यह है कि जितना जप या पाठ हो उसके दशांश का हवन, उस हवन के दशांश के तर्पण, तर्पण के दशांक का मार्जन और उसके दशांश ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिये। उदाहरण के लिये किसी से 'मानस' का एक नवाह्न पाठ किया। 'मानस' की मन्त्र संख्या प्राचीन लोग छः सहस्त्र मानते हैं।

इसलिये छः सौ आहुतियां पड़ेगी। 'रां रामायनम:' मन्त्र से क्योंकि इस ग्रन्थ को राम-नाम मय माना जाता है। यदि पाठ किसी सम्पुट सहित है तो आहुति उस सम्पुट के मन्त्र से ही पड़ेगी और बारह सौ पड़ेगी; क्योंकि छः हजार बार सम्पुट का पद भी पाठ हुआ है। छः सौ आहुति हैं तो साठ बार और बारह सौ हैं तो एक सौ बीस बार उसी आहुति वाले मन्त्र से तर्पण तथा उसी मन्त्र से छः बार अथवा बारह बार मार्जन करना है। यदि छः बार मार्जन हुआ है तो एक ब्राह्मण को और बारह बार मार्जन हुआ है तो दो ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये।

(झ) पाठ या अनुष्ठान कब निष्फल होता है? इसके कई कारण है – 1. देवता में तथा अनुष्ठान में श्रद्धा विश्वास न हो। संशय के साथ या परीक्षा के लिये किया जाये। 2. व्यग्रचित्त से किया जाये मन लगाकर स्थिर भाव से न किया जाये। 3. शुद्ध-अशुद्ध कैसे भी जल्दी-जल्दी समाप्त कर लिया जाये। 4. प्रारब्ध में कोई बलवान कर्म-संस्कार हमारी इच्छा का बाधक हो रहा हो। 5. किसी को हानि पहुँचाने के लिये या किसी अधर्मपूर्ण उद्देश्य के लिये अनुष्ठान किया जा रहा हो। चौथा कारण हो तो धैर्यपूर्वक अनुष्ठान दो-तीन बार करना चाहिये। शेष कारणों से बचना चाहिये।

(ञ) पाठ में छः दोष माने जाते हैं। छः दोषों को त्याग करके ही पाठ करने से पाठ का सम्पूर्ण लाभ होता है। 1. मौन धारणकर मन-ही-मन पाठ करना। ऐसा न करके, पाठ इतना स्पष्ट बोलकर करना चाहिये कि समीप कोई बैठा हो तो उसे सुनायी पड़े। 2. शीघ्र पाठ – इतना जल्दी-जल्दी पाठ करना कि शुद्धि और अशुद्धि का अपने को ही पता न चले। पाठ स्थिर कण्ठ से धीरे स्वर में करना चाहिये। 3. गाकर पाठ करना भी दोष है। पाठ सामान्य स्वर में करना चाहिये। 4. सिर या शरीर को हिलाते हुए

पाठ नहीं करना चाहिये। 5. बिना ध्यान दिये, इधर-उधर देखते हुए, तिनका नोचते, कपड़े से खेलते, पाठ नहीं करना चाहिये। पाठ पर ही पूरा ध्यान देना चाहिये। 6. अर्थ बिना समझे भी पाठ करना दोष माना जाता है। इसलिये जहाँ तक हो, पाठ करते समय अर्थ का भी ध्यान रखना चाहिये।

(ट) पाठ करते समय शौच, लघुशंका का वेग न हो, इसके लिये इनसे निवृत्त होकर बैठना उचित है। लेकिन इनका वेग हो ही जाये तो वेग रोककर पाठ करना दोष माना जाता है। अतः दोहे पर पाठ रोककर इनसे निवृत होकर, हाथ-पैर धोकर, आचमन करके तब पाठ करना चाहिये। पाठ करते समय छींक या जम्हाई आवे, नाक साफ करना हो तो इसके पश्चात् हाथ धोकर आचमन करके तब पाठ प्रारम्भ किया जाता है।

(ठ) अनेक बार पाठके मध्य में स्थान परिवर्तन आवश्यक हो जाता है विशेषतः तब जबकि आप खुले स्थान पर पाठ कर रहे हों। आँधी, वर्षा जैसी बाधाएँ आ जाती हैं। ऐसे अवसर पर स्थान परिवर्तन करके पाठ को प्रारम्भ करने के पूर्व आचमन करना चाहिये। बीच मे किसी से बोलना पड़ जाये, तो भी आचमन करना चाहिये। मंदिर मे देवमूर्ति के सम्मुख पाठ करते हों और आरती होने लगे तो पाठ रोककर खड़े हो जाना चाहिये। आरती के पश्चात् आचमन करके तब पाठ करना चाहिये। पाठ करते समय अपने गुरूदेव या कोई बहुत सम्मान्य संत आ जाये तो उठकर उन्हें प्रणाम करके उनकी अनुमति लेकर तब आचमन करके पाठ करना चाहिये। लेकिन सामान्य आदरणीय के आने पर पाठ रोकना नहीं चाहिये। केवल हाथ जोड़कर मस्तक झुका कर प्रणाम कर लेना पर्याप्त है।

(ड) अनुष्ठान के मध्य में कोई बीमारी आ जाये, जात सूतक या मरण सूतक आ जाये तो यदि सम्भव हो तो किसी ब्राह्मण के द्वारा शेष

अनुष्ठान पूरा कर देना चाहिये। यदि ऐसा प्रबन्ध न हो सके तो उस बाधा के दूर होने पर प्रारम्भ से ही अनुष्ठान फिर कराना चाहिये।

(ढ) अनेक बार अनुष्ठान करते समय अनुष्ठान के दिनों में रात्रि में स्वप्न में अथवा अनुष्ठान काल में ही कुछ अनुभव होते हैं। कुछ दिखाई या सुनाई पड़ता है। कभी कोई आदेश भी मिलता है ऐसे अनुभवों की चर्चा किसी से नहीं करनी चाहिये। यदि कोई आदेश किसी विशेष व्रत, दान, तप, त्याग या साधन का है तो आदेश का पालन करना चाहिये। लेकिन यदि आदेश अनुष्ठान त्याग का है, कोई प्रलोभन या साधन-विमुख करने की, अकरणीय करने की बात है, कोई भय दिखाया गया है तो उस पर ध्यान नहीं देना चाहिये। वह अनुभव बार-बार भी उसी रूप में हो, तब भी उसकी उपेक्षा ही करनी चाहिये।

(ञ) अपने आलस्य-प्रमाद को पुष्ट करने के लिये या किसी अनुचित इच्छा की पूर्ति के लिये यदि अनुष्ठान किया जायेगा तो वह पूरा नहीं होगा। उसका फल विपरीत भी हो सकता है। जैसे कोई विद्यार्थी पढ़ने में मन लगावे नहीं, अध्ययन के समय तो खेल-कूद और दूसरे व्यसनों में समय दे और परीक्षा के समय उत्तीर्ण होने के लिये अनुष्ठान का आश्रय ले, तो उसके असफल होने की सम्भावना ही अधिक रहेगी। पढ़ने में श्रम करे, रोगादि से कोई विशेष बाधा ही पड़ गयी हो और तब अनुष्ठान का सहारा ले तो सफलता मिल सकती है।

(त) आगे सम्पुट तथा सम्पुट वल्ली शब्द का प्रयोग मिलेगा। सम्पुट का अर्थ है पाठ प्रारम्भ करते समय एक बार सम्पुट वाले दोहे या चौपाई से बोल कर तब श्लोक, दोहा, छन्द या अर्धाली (चौपाई के दो चरण) बोलना और फिर एक बार सम्पुट की चौपाई बोलना। सम्पुट वल्ली का अर्थ है प्रत्येक दोहे, चौपाई, श्लोकादि पढ़कर सम्पुट वाले पद को दो बार बोलना।

अनुष्ठान

सब से अधिक प्रभावकारी अनुष्ठान होता है जो सम्पुट वल्ली सहित किया जाये। उससे कुछ कम शक्ति का अनुष्ठान है जो सम्पुट पाठ सहित किया जाये। उससे भी कम शक्ति है उसमें जो केवल दोहे पर सम्पुट करके नवाह्न के क्रम से किया जाये। सम्पुट वल्ली सहित नवाह्न पाठ, सम्पुट सहित नवाह्न पाठ तथा केवल दोहे पर सम्पुट करके नवाह्न पाठ, यह तीन क्रम नवाह्न पाठ करने के नियम है। 'मानस' का नवाह्न पाठ ही मुख्य रूप से अनुष्ठान में उपयोगी माना जाता है।

चाहे कोई अनुष्ठान हो, संकल्प के अनुसार ही फल देता है अत: प्रत्येक अनुष्ठान के पूर्व संकल्प अवश्य पढ़ना चाहिये।

–जो इच्छा हो वैसा ही संकल्प तथा वैसा ही सम्पुट पाठ करने से फल प्राप्त होता है। विपरीत सम्पुट या संकल्प हो तो फल विपरीत होता है। जैसे नारद जी के मन में विवाह करने का संकल्प था और प्रार्थना उन्होंने की –

''जहि विधि नाथ होइ हित मोरा।
करहु सो बेगि दास मैं तोरा।।''

तो इसका फल उन्हें विपरीत हुआ।

अतिशीघ्र फलदायी एकाह पाठ

अतिशीघ्र कामना हो, उसका संकल्प करके शंकरजी या हनुमान जी के मन्दिर में बैठकर एक दिन में सम्पूर्ण रामचरित मानस का पाठ करें। उस दिन व्रत करें, पाठ पूर्ण होने पर फलहार करें।

तीन दिन लगातार पाठ करने पर कठिन काम भी पूरा हो जाता है। यदि गुरूवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो और उस दिन पाठ किया जाये तो बहुत फलप्रद होता है। एकाह पाठ मे कोई सम्पुट आवश्यक नहीं है। नवाह्न में

आगे बताये गये क्रम को अपना कर भी एकाह पाठ किया जा सकता है।

दो दिन या तीन दिन में पाठ

अपने उद्देश्य का संकल्प करके हनुमान जी या शंकर जी के मन्दिर में दोहे पर सम्पुट करते हुए सम्पूर्ण ग्रन्थ का पाठ दो या तीन दिन में कर लेने से भी बहुत शीघ्र लाभ होता है।

नवाह्न पाठ

नवाह्न पाठ सकाम करना हो तो सम्पुट के साथ ही करना चाहिये। सम्पुट वल्ली, सम्पुट अथवा दोहे पर सम्पुट का क्रम रखा जा सकता है। किसी उद्देश्य के लिये क्या सम्पुट उपयुक्त है, यह बात आगे बताई गयी है। यहाँ किसी उद्देश्य के लिये ग्रन्थ का पाठ कहाँ से प्रारम्भ करना चाहिये, यह बताया जा रहा है। नौ दिन में ग्रन्थ समाप्त करना होता है। जहाँ से पाठ प्रारम्भ किया है, वहीं समाप्त करना चाहिये।

भक्ति की प्राप्ति, भगवत्प्राप्ति अथवा मोक्ष प्राप्ति के लिये– ग्रन्थ को प्रारम्भ से ही पाठ करना चाहिये। प्राय: लोग इसी प्रकार पाठ प्रारम्भ करते हैं।

मंगल तथा सुख की प्राप्ति के लिये – बालकाण्ड दोहा, 103 शिवचरित्र की समाप्ति से प्रारम्भ कीजिये।

कन्याओं को वर प्राप्ति के लिये– बालकाण्ड सोरठा–236– 'जानि गौरि अनुकूल' से प्रारम्भ करना चाहिये।

प्रेम प्राप्ति के लिये–दोहा 190 बालकाण्ड 'जोग लगन ग्रह वार तिथि' यहाँ से प्रारम्भ करें।

दाम्पत्त्य सुख एवं विवाह के लिये – बालकाण्ड के अन्तिम सोरठे से प्रारम्भ करें।

वैराग्य प्राप्ति के लिये अयोध्या काण्ड दोहा 318 'लखनहिं भेटि प्रनाम करि' से प्रारम्भ करें।

शत्रु-विजय के लिये – अरण्य काण्ड दोहा 20 'हरषित वरषहि सुमन सुर' से।

रोग-निवृत्ति के लिये – किष्किन्धा काण्ड अन्तिम दोहा- 'भज भेषज रघुनाथ जस' से।

कार्य सिद्धि के लिये – सुन्दर काण्ड दोहा 33 'ताकहँ प्रभु कछु अगम नहिं' से।

सम्पत्ति और पद प्राप्ति के लिये – सुन्दर काण्ड दोहा 49 'जो सम्पत्ति सिव रावनहिं' से।

विजय प्राप्ति के लिये – लंका काण्ड दोहा 121, अन्तिम दोनों दोहों से ।

वियुक्त स्वजन से भेंट के लिये – उत्तरकाण्ड दोहा 5 'पुनि प्रभु हरषि सत्रुहन' से।

लघु अनुष्ठान

◈ निर्विघ्न उत्सव कार्य की पूर्णता के लिये प्रतिदिन बाल-काण्ड के उमा-विवाह चरित का पाठ करना चाहिये। अर्थात् "जब ते उमा सैल गृह जाई।" इस चौपाई से शिव-चरित के अन्त तक पाठ करना उत्तम है।

◈ वैवाहिक मंगल कार्य के लिए – श्रीराम विवाह अर्थात् बालकाण्ड दोहा 209 'आयुध सर्व समर्पि कै' से प्रारम्भ करके शेष पूरे बालकाण्ड का प्रतिदिन पाठ करना उत्तम है।

◈ वैराग्य प्राप्ति के लिए-अयोध्या काण्ड का सम्पूर्ण पाठ अथवा दोहा 156 "तब वशिष्ठ मुनि समय सम" से प्रारम्भ करके काण्ड के अन्त तक का प्रतिदिन पाठ करना चाहिये।

◈ भक्ति प्राप्ति के लिये-प्रतिदिन सम्पूर्ण अरण्य काण्ड का पाठ करना उत्तम है।

◈ किसी बड़े कार्य के संकल्प की सिद्धि के लिये प्रतिदिन किष्किन्धा काण्ड का पाठ करना चाहिये।

◈ कोई ग्रह-बाधा, रोग, विपत्ति निवारण करना हो तो प्रतिदिन सुन्दर काण्ड का पाठ शीघ्र लाभदायक है।

◈ शत्रु विजय, मुकदमे में सफलता तथा बड़े व्यापारी की सफलता के लिये प्रतिदिन लंकाकाण्ड का पाठ करना चाहिये।

◈ बिछुड़े स्वजन से मिलाप के लिये उत्तरकाण्ड के प्रारम्भिक सात दोहे - "लछिमन अरु सीता सहित प्रभुहिं विलोकति मातु" तक का नित्य पाठ श्रेष्ठ है।

◈ ज्ञान की प्राप्ति के लिये उत्तर काण्ड 'गयउ मोर सन्देह' सोरठा 68 से प्रारम्भ करके काण्ड के अन्त तक पाठ प्रतिदिन करें।

सम्पुट के उपयुक्त अंश

नीचे दिये गये पदों का सम्पुट अनुष्ठान में कामना के अनुसार उपयोग तो किया ही जाता है। जो लोग सम्पुट नवाह्न पाठ करना चाहते हैं, वे भी यदि आगे बताई विधि से सम्पुट के पद को पहले हवन करके सिद्ध कर लें तो उन्हें अधिक शीघ्र सफलता मिलेगी। लेकिन वे बिना हवन करके सिद्ध किये सम्पुट पाठ करें तो भी सम्पुट पाठ अपना फल अवश्य देगा।

1. विपत्ति नाश के लिये -

राजिव नयन धरे धनु सायक।
भगत विपति भंजन सुखदायक।।

2. संकट निवारण के लिये -

दीन दयाल विरिदु संभारी।
हरहु नाथ मम संकट भारी।।

3. कार्य की निर्विघ्न पूर्णता के लिये –

सकल विघ्न व्यापहि नहिं तेही।

राम सुकृपा विलोकहिं जेही।।

4. बाहरी अशान्ति दूर करने के लिये –

जब ते राम ब्याहि घर आये।

नित नव मंगल मोद बधाये।।

5. रोग, शोक, महामारी, मिटाने के लिये–

दैहिक दैविक भौतिक तापा।

राम राज नहिं काहूहि व्यापा।।

6. आधिदैविक उपद्रव–प्रेतबाधादि दूर करने के लिये–

जय रघुवंस बनज बन भानू।

गहन दनुज कुल दहन कृसानू।

अथवा

हनुमान अंगद रन गाजे।

हांक सुनत रजनींचर भाजे।।

7. विष–प्रभाव दूर करने के लिये–

नाम प्रताप जान सिव नीको।

काल कूट फल दीन्ह अमीको।।

8. जीविका प्राप्ति के लिये–

विस्व भरन पोषन कर जोई।

ताकर नाम भरत अस होई।।

9. शत्रु-विजय के लिये-

जाके सुमिरन ते रिपु नासा।
नाम शत्रुहन वेद प्रकासा।।

अथवा

रिपु रन जीत सुजषु सुर गावत।
सीता अनुज सहित प्रभु आवत।।

10. दरिद्रता दूर करने के लिये-

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के।
कामद घन दारिद दवारि के।।

11. धन सम्पत्ति प्राप्ति के लिये -

जे सकाम नर सुनहि जे गावहिं।
सुख सम्पत्ति नाना विधि पावहिं।।

12. मनोरथ पूर्ति के लिये -

सो तुम जानहु अन्तर जामी।
पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी।

अथवा

भव भेषज रघुनाथ जस, सुनहि जे नर अरु नारि।
तिन्हकर सकल मनोरथ, सिद्ध करहिं त्रिसरारि।।

13. विवाह के लिये -

भुवन चारि दस भरा उछाहू।
जनक सुता रघुबीर विवाहू।।

14. शत्रु से सन्धि के लिये -

गरल सुधारिपु करइ मिताई।

गोपद सिन्धु अनल सितलाई।।

15. किसी कार्य के लिये जाते समय –

प्रविसि नगर कीजै सब काजा।

हृदय राखि कोसलपुर राजा।।

16. कवित्व प्राप्ति के लिये –

जेहि पर कृपा करहिं जन जानी।

कवि उर अजिर नचावहिं बानी।।

17. विद्या तथा निर्मल बुद्धि प्राप्ति के लिये –

जनक सुता जग जननि जानकी।

अतिसय प्रिय करुनानिधान की।।

ताके जुग पद कमल मनावऊँ।

जासु कृपा निरमल मति पावऊँ।।

18. वियुक्त बन्धु से मिलने के लिये –

जेहिके जेहि पर सत्य सनेहू।

सो तेहि मिलइ न कछु सन्देहू।।

19. भक्ति प्राप्ति के लिये –

भगत कल्पतरु प्रनत हित, कृपासिन्धु सुखधाम।

सोइ निज भगति मोहि प्रभु, देहु दया करि राम।।

20. भगवत्प्रेम प्राप्ति के लिये –

कामिहि नारि पियारि जिमि, लोभिहि प्रिय जिमि दाम।

तिमि रघुनाथ निरन्तर, प्रिय लागहु मोहिं राम।।

21. कठिन क्लेश को दूर करने के लिये -

हरन कठिन कलि कलुस कलेसू।

महामोह निसि दलन दिनेसू।।

22. जपहिं नामु जन आरति भारी।

मिटहिं कुसङ्कट होहिं सुखारी।।

दीनदयाल विरद संभारी।

हरहु नाथ मम संङ्कट भारी।।

23. शत्रु से रक्षा के लिये -

हनुमान अङ्गद रन गाजे।

हांक सुनत रजनीचर भाजे।।

24. नजर झाड़ने के लिये -

स्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी।

निरखहि छबि जननी तृन तोरी।।

25. खोई हुई वस्तु को प्राप्त करने के लिये -

गई बहोरि गरीब नेवाजू।

सरलसबल साहिब रघुराजू।।

26. सुख सम्पत्ति के लिये -

जिमि सरिता सागर महु जाहीं।

जद्यपि ताहि कामना नाहीं।।

तिमि सुख सम्पत्ति विनहि बोलाये।

धरमसील पहि जाहि सुभाये।।

27. पुत्र प्राप्ति के लिये -

प्रेम मगन कौसल्या, निसि दिन जात न जान।

सुत सनेह बस माता, बाल चरित कर गान।।

28. विवाह के लिये –

तब जनक पाइ वसिष्ठ आयसु, व्याह साज संवारि के।

मांडवी श्रुतिकीरति उरमिला कुअरि लईं हकारि के।।

29. शत्रुता नाश करने के लिये –

बयरु न कर काहू सन कोई।

राम प्रताप बिषमता खोई।।

30. यात्रा की सफलता के लिये चलते समय –

चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई।

चले हृदय अवधहिं सिरु नाई।।

अथवा

जामवंत के वचन सुहाये।

सुनि हनुमंत हृदय अति भाये।।

31. यात्रा तथा उद्योग की सफलता के लिए (प्रवेश करते समय)

प्रविसि नगर कीजै सब काजा।

हृदय राखि कोसलपुर राजा।।

32. शत्रु का सामना करने के लिये –

कर सारंग साजि कटि भाथा।

अरि दल दलन चले रघुनाथा।।

33. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये –

मोरि सुधरिहि सो अब भांती।

जासु कृपा नहिं कृपा अघाती।।

34. शत्रु से मित्रता के लिये –

गरल सुधा रिपु करइ मिताई।
गोपद सिन्धु अनल सितलाई।।

35. विद्या प्राप्ति के लिये –

गुरू गृह गये पढ़न रघुराई।
अलप काल विद्या सब आई।।

36. श्री हनुमान जी को प्रसन्न करने के लिये –

सुमिरि पवनसुत पावन नामू।
अपने बस करि राखे रामू।।

37. श्री सीता राम जी के दर्शन के लिये –

नील सरोरुह नील मनि, नील नीरधर स्याम।
लाजहितन सोभा निरखि, कोटि-कोटि सतकाम।।

38. भगवच्चिन्तन पूर्वक आराम से मरने के लिये –

राम चरन दृढ़ प्रीति करि, वालि कीन्ह तनु त्याग।
सुमन माल जिमि कंठते, गिरत न जानइ नाग।।

39. सब सुख प्राप्ति के लिये –

सुनहिं विमुक्त बिरति अरु बिषई।
लहहिं भगति गति संपति नई।।

40. कुशल क्षेम के लिये –

भुवन चारि दस भरा उछाहू।
जनक सुता रघुबीर विआहू।।

41. ऋषि-सिद्धि प्राप्ति के लिये –

साधक नाम जपहिं लय लाएँ।
होहि सिद्ध अनिमादिक पाएँ।।

42. भय से बचने के लिये –

पाहि पाहि रघुबीर गोसाईं।
यह खल खाइ काल की नाईं।।

43. अपवाद को दूर करने के लिये –

राम कृपा अवरेव सुधारी।
बिबुध धारि भइ गुनद गोहारी।।

44. कार्य सिद्धि के लिये –

स्वयंसिद्ध सब काज, नाथ मोहि आदरु दियउ।
अस विचारि जुवराज, तन पुलकित हरषित हियउ।।

45. अकाल मृत्यु निवारण के लिये –

नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहि प्रान केहि बाट।।

46. तिजारी ज्वारादि के नाश के लिये –

त्रिविध दोष दुःख दारिद दावन।
कलि कुचालि कुलि-कलुष नसावन।।

47. वर्षा के लिये –

सोइ जल अनल अनिल संघाता।
होइ जलद जग जीवनदाता।

48. गुप्त मनोरथ सिद्धि के लिये –

सुनहु देव सचराचर स्वामी।
प्रनत पाल उर अंतरजामी।।

मोर मनोरथ जानहु नीके।

बसहु सदा उर पुर सबही के।।

49. क्लेश नाश के लिये –

आसुतोष तुम अवढ़र दानी।

आरति हरहु दीन जन जानी।।

50. मंगल के लिये –

मंगल भवन अमंगल हारी।

द्रवहु सो दशरथ अजिर बिहारी।।

51. पुत्र प्राप्ति के लिये –

मातु दुलारइ कहि प्रिय ललना से प्रारम्भ करके उल्टा पाठ करें और–

दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहउँ सतिभाउ।

चाहउँ तुमहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ।।

52. श्री गिरिजा की प्रसन्नता के लिये –

जय जय गिरिवर राज किशोरी।

जय महेस मुख चंद चकोरी।

53. भव–भीर–नाश के लिये–

मो सम दीन न दीन हित, तुम्ह समान रघुबीर।

अस विचारि रघुवंस मनि, हरहु विषम भव भीर।

54. ऋण मोचन मंत्र –

केवल जप करने से भी लाभ। अथवा आदि और अंत में इसका 108 बार जप करके सुन्दर काण्ड का पाठ करें।

महाबीर विनवऊँ हनुमाना।

राम जासु जस आप बखाना।।

पवन तनय बल पवन समाना।

बुधि बिवेक विग्यान निधाना।।

कवन सो काज कठिन जगमाहीं।

जो नहि होइ तात तुम पाहीं।

प्रनवउँपवन कुमार, खल बन पावक ग्यान घन।

जासु हृदय आगार, बसहि राम सर चाप धर।।

55. दुर्भाग्य को दूर करने के लिये –

मंत्र महामनि विषय ब्याल के ।

मेटत कठिन कुअंक भाल के।।

56. सर्व मनोरथों के लिये –

जनक सुता जग जननि जानकी।

अतिसय प्रिय करूना निधान की।।

ताके जुग पद कमल मनावउँ।

जासु कृपा निरमल मति पावउँ।।

57. चिन्ता से मुक्ति के लिये –

त्राहि-त्राहि जानकी जानि वर।

छमा सीव समरथ करुनाकर।।

मामवलोकय पंकज लोचन।

कृपा बिलोकनि सोच विमोचन।।

58. कार्य की सिद्धि के लिये –

महाबीर विनवउँ हनुमाना।

राम जासु जसु आप बखाना।।

कवन सो काज कठिन जगमाहीं।

जो नहि होइ तात तुम पाहीं।

59. घोर संकट निवारण के लिये –

जननि जनक सिय राम प्रेम के।

बीज सकल ब्रत धर्म नेम के।।

मंत्र महामनि विषय व्याल के।

मेटत कठिन कुअंक भाल के।।

60. आपदा निवारण के लिये –

ऊँ आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।

लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्।।

61. रोग नाश के लिये –

किसी प्रकार का रोग क्यों न हो आप सायंकाल में यथा शक्ति शौच स्नान करके पवित्र हो जाइयें। सामने घी का दीपक जलाकर रख लीजिये। शुद्ध पात्र में जल भर कर रख लीजिये। तुलसी माला पर निम्नलिखित मन्त्र का 1008 बार जाप कीजिए-

दैहिक दैविक भौतिक तापा।

राम राज नहिं काहुहि व्यापा।।

पश्चात् दीपक के कज्जल (काजल) बना लीजिये। जल पात्र का जल रोगी को बार-बार पिलाते रहिये और काजल कपाल में प्रतिदिन लगाइये। रोगों का नाश होता है।

62. सर्व प्रकार के मंगल के लिये –

सुन्दर काण्ड का पाठ प्रतिदिन करना चाहिये और उसके प्रत्येक पद

के साथ अथवा प्रति दोहे पर निम्नलिखित सम्पुट बोलना चाहिये।

मंगल मूरति मारूत नन्दन।

सकल अमंगल मूल निकंदन।।

(वि0प0)

63. ऐश्वर्य के लिए -

प्रतिदिन उत्तरकाण्ड का पाठ प्रारम्भ से 15वें दोहा तक करना चाहिये।

64. इनके सिवा -

साढ़े साती ग्रह की शांति के लिये हनुमान चालीसा का 100 दिनों तक प्रतिदिन 100 पाठ करें।

65. सात चौपाइयाँ -

मामभिरक्षय रघुकुल नायक।
धृतवर चाप रुचिर कर सायक।।
मामवलोकय पंकज लोचन।
कृपा विलोकनि सोच विमोचन।।
मोरि सुधारिहि सो सब भांती।
जासु कृपा नहि कृपा अघाती।।
गई बहोर गरीब नेबाजू।
सरल सबल साहिब रघुराजू।।
असरन सरन बिरद संभारी।
मोहि जनि तजहु भगत हितकारी।।
मोरे तुम प्रभु गुरू पितु माता।
जाउँ कहां तजि पद जल जाता।।
तुमहि बिचारि कहहू नरनाहा।

प्रभु तजि भवन काज मम काहा।।

बालक बुद्धि ग्यान बल हीना।

राखहु सरन नाथ जन दीना।।

दीन दयाल विरिदु संभारी।

हरहु नाथ मम संकट भारी।।

अब प्रभु कृपा करहु एहिं भांती।

सब तजि भजन करउँ दिनराती।।

प्रत्येक चौपाई के एक-एक खण्ड में महामन्त्र 'श्रीराम जय राम जय जय राम' का सम्पुट लगा दिया जाये तो सिद्ध मन्त्र हो जायेगा। बिना सम्पुट पाठ करने से अविद्या का नाश होता है। भक्ति बढ़ती है।

'मानस' का प्रत्येक पद ही मंत्र है। यहाँ से ही मंत्र दिये गये हैं। अपने संकल्प के अनुरूप आप कोई भी दोहा, सोरठा या चौपाई स्वयं चुन सकते हैं।

विशेष –

1. जो सम्पुट जिस कार्य के लिये दिये गये हैं, उसी कार्य के लिये वे अकेलै जप से भी सिद्धि देने वाले हैं।

2. उन सम्पुटों को मन्त्र रूप में कैसे काम में लिया जाये वह बतलाया जा रहा है।

कुछ पालनीय नियम

1. 'रां रामाय नमः' या श्री राम-नाम का जप अधिक से अधिक कीजिये।

2. एक बार में कार्य सिद्ध न हो तो निराश मत होइये। श्रद्धापूर्वक नौ बार अनुष्ठान कीजिये। यह पुस्तक उन्हीं के लिये है, जो रामचरित मानस में श्रद्धा रखते हैं। दृढ़ निश्चय कीजिये कि लाभ अवश्य होगा।

3. पाठ या जप करते समय बीच में मत बोलिये। इधर-उधर मत देखिये। भगवान् का ध्यान करते रहिये।

4. पाठ के समय लघुशंका के लिए उठना पड़े तो कुल्ला कीजिये और पाँव धो लीजिये तब पाठ कीजिये। शौच के पश्चात् वस्त्र बदल लेना चाहिये।

5. स्मरण रखिये-सकाम भाव से अनुष्ठान विधिपूर्वक रूप से करने से पहले कामना पूरी होती है - पश्चात् क्रमशः अन्तःकरण की शुद्धि होकर अन्त में निष्कामता तथा भगवत्प्रेम की प्राप्ति होती है।

6. पाठ करने के लिये श्री रामचरित मानस की पुस्तक अपनी खास होनी चाहिये-दूसरे की नहीं। अपनी पुस्तक किसी को छूने नहीं दें। पवित्र स्थान पर पुस्तक को रखें। पाठ के समय पुस्तक का आसन आपके आसन से ऊँचा होना चाहिये। प्रतिदिन पुस्तक को प्रणाम करके पाठ प्रारम्भ करना चाहिये।

अनुष्ठान कैसे करना चाहिये-

1. अनुष्ठान स्वयं करना चाहिये।

2. स्वयं न कर सके तो सदाचारी और शास्त्रवेत्ता ब्राह्मण के द्वारा भी करवा सकते हैं। यदि धर्मपत्नी हो तो वह भी अपने स्वामी के लिए अनुष्ठान कर सकती है।

3. यदि किसी कारण से स्वयं करने में असमर्थ हों तो किसी भी शुद्ध, सदाचारी, सम्बन्धी के द्वारा अनुष्ठान करा सकते हैं।

4. अनुष्ठान करने के लिये पुण्य क्षेत्र, सिद्धपीठ, नदीतट, गुफा, पर्वतशिखर, तीर्थस्थान, पवित्र वन, पवित्र उद्यान, बिल्व वृक्ष, तुलसी वन, गोशाला (जिसमें बैल या अन्य पशु न हों) देव मन्दिर, पीपल वृक्ष, वट वृक्ष, आँवला वृक्ष के नीचे या जल में खड़ा होकर अच्छा माना गया है। इन स्थानों से अनुष्ठान करने से शीघ्र लाभ होता है।

5. यदि हो सके तो सूर्य, अग्नि, ब्राह्मण, गुरू, चन्द्रमा, दीपक, जल, गौ और सन्त के सामने बैठकर जप अनुष्ठान करें तो विशेष लाभदायक होता

है।

6. उपयुर्क्त साधन सम्भव नहीं हो वहाँ पर बैठ कर जहाँ मन में प्रसन्नता बढ़े वहीं अनुष्ठान करना चाहिये। अपने घर में भी करना अच्छा है।

7. गुरू के निकट बैठ कर अनुष्ठान करें तो हजारों गुना अधिक लाभ होता है।

8. स्त्री संसर्ग और उनकी चर्चा से बचता रहे। क्षौर नहीं करावे। सिर पर वस्त्र रखकर अनुष्ठान नहीं करे।

9. मानस अनुष्ठान में हवन एवं ब्राह्मण भोजन कराना आवश्यक नहीं है। केवल अधिक से अधिक भगवन्नाम कीर्तन करे। हवन, ब्राह्मण भोजन कराना वैसे उत्तम है।

मानस मन्त्र सिद्ध कैसे करें?

मानस मन्त्र को सिद्ध करने के लिये हवन करना पड़ता है। हवन में बाहरी वस्तुओं की भी आवश्यकता होती है। उनके नाम ये हैं -

1. चन्दन बुरादा (एक तोला)
2. तिल (आधा सेर)
3. चीनी (एक पाव)
4. शुद्ध घी (एक पाव)
5. अगर (1 तोला)
6. तगर (एक तोला)
7. कपूर (एक तोला)
8. शुद्ध केशर (तीन माशा)
9. नागर मोथा (एक तोला)
10. पंचमेवा (एक छटाँक)
11. चावल (आधा पाव)
12. जौ (एक पाव)।

दी गई मात्रा को इस प्रकार समझे

आधा सेर - 400 ग्राम
एक पाव - 200 ग्राम
आधा पाव - 100 ग्राम
एक छटाँक - 50 ग्राम
एक तोला - 10 ग्राम
एक माशा - 3 ग्राम

पंचमेवा में निम्नलिखित वस्तुएँ होनी चाहिये - पिस्ता, बादाम,

किशमिश, अखरोट और काजू (प्रत्येक एक तोला)।

इनके अभाव में निम्नलिखित वस्तुओं से भी काम ले सकते हैं–

मिश्री, छोहाड़ा चिरौंजी, नारियल की गरी और किशमिश। सर्वप्रथम सब वस्तुओं को मिला लेना चाहिये। प्रत्येक आहुति लगभग पौन तोले की होनी चाहिये।

108 आहुतियाँ देनी पड़ती हैं। गिनती करने के लिए एक माला रख लेनी चाहिये। दाहिने हाथ से आहुति डाल कर दाहिने हाथ से ही माला का मनका सरकाना चाहिये। यदि माला न ले सके तो गेहूँ, जौ या चावल के 108 दाने रख कर गिनती कर सकते हैं। बैठने के लिये कुश या ऊन का आसन होना चाहिए।

हवन रात को 10 बजे के बाद ही करना चाहिये। काशी जी की ओर मुँह करके बैठें और उन्हीं को साक्षी बनाकर हवन कर श्रद्धा और विश्वास पूर्वक हवन करना चाहिए। इन सब बातों को गुप्त ही रखें। न किसी को देखने दें और न किसी को सुनावें।

सर्वप्रथम 108 आहुतियाँ देकर निम्नलिखित चौपाई को सिद्ध कर लें। यह चौपाई रक्षा मन्त्र है –

मामभिरक्षय रघुकुल नायक।

धृत वर चाप रूचिर कर सायक।।

एक बार मन्त्र को सिद्ध कर लेने पर सदा के लिये यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर जहाँ-कहीं भी संकटपूर्ण स्थान में रहना पड़े वहाँ संकट और भय से बचने के लिये इस मन्त्र को पढ़कर अपने चारों ओर रेखा खींच लें–कोई भय नहीं रहेगा। मानस के किसी भी मन्त्र को सिद्ध करने के पहले रक्षा–रेखा खींच लेनी चाहिये।

हवन करते समय मन्त्र का उच्चारण बोलकर या मन–ही–मन कर सकते हैं। स्त्रियाँ भी सिद्ध कर सकती हैं, पर सूतक तथा रजस्वला के समय नही। लंकाकाण्ड के जो मन्त्र हो, उनको शनिवार को ही सिद्ध करना

पड़ता है। रक्षा-मन्त्र तथा अन्य काण्डों के मन्त्र को किसी भी दिन सिद्ध कर सकते हैं।

नवीन अथवा शुद्ध धुले हुये वस्त्रों को पहन कर ही हवन करना चाहिये। वस्त्र फटा हुआ अथवा सिला हुआ नहीं हो। रात का पहना हुआ वस्त्र भी नहीं हो। दूसरों के पहने हुए वस्त्रों को पहन कर हवन करना भी निषेध है। किसी पवित्र कमरे में या मंजिल पर हवन कर सकते हैं : मन्त्र सिद्ध कर लेने पर प्रति दिन 108 बार प्रातः सायं अथवा रात में जप करना चाहिये। इसके अलावा चलते-फिरते अधिक-से अधिक जितना कर सकें, करते रहें। श्रद्धा-विश्वासपूर्वक ही लाभ होता है। दृढ़ निश्चय रख कि श्री सीताराम जी की कृपा से लाभ हो रहा है। सफलता तो होगी ही।

ध्यान देने योग्य बातें -

1. मानस-मन्त्र को सिद्ध करने के लिये हवन हेतु अलग कुण्ड बनाने की आवश्यकता नहीं है। केवल मिट्टी की बनाकर उस पर अग्नि रख दीजिये और आहूति डालिये।
2. आहुति देते समय मन्त्र के अन्त में "स्वाहा" बोलना आवश्यक है।
3. हवन की सामग्री में कोई चीज कम ज्यादा भी हो सकती है।
4. 'रक्षा-रेखा' मन्त्र को सिद्ध करने के लिये अलग हवन कीजिये और जप करने वाले मन्त्रों को अलग। एक साथ दोनों नहीं कर सकते हैं।
5. 'रक्षा-मन्त्र' अथवा अन्य किसी मन्त्र को एक बार सिद्ध कर लेने पर वह सदा के लिये सिद्ध हो जाता है। पुनः दुबारा नहीं करना पड़ता।
6. पीपल, वट तथा तुलसी वृक्ष के नीचे बैठकर श्री मानस का पाठ करने से विशेष लाभ होता है। विल्ब वृक्ष के नीचे किसी शिवालय में अथवा गोशाला में नदी तट पर, प्राकृतिक गुफा में तथा पर्वत पर भी पाठ करने से शीघ्र ही लाभ होता है।
7. ग्रहण के समय और रात को 12 बजे किसी मन्त्र को जपने से वह

मन्त्र सिद्ध होकर मनवांछित फल देता है।

8. चैत्र, बैशाख, माघ और कार्तिक के महीनों के शुक्ल पक्ष में मानस का अनुष्ठान विशेष लाभप्रद होता है।

नवरात्र में इसका अनुष्ठान विशेष लाभप्रद है।

जाके गति है हनुमान की।

ताकी पैज पूजि आई, यह रेखा कुलिस पषान की।।1।।
अघटित-घटन, सुघट-विघटन, ऐसी विरुदावलि नहिंआनकी।।
सुमिरत संकट-सोच-विमोचन, मूरति मोद-निधान की।।2।।
तापर सानुकूल गिरिजा, हर, लषन, राम अरु जानकी।
तुलसी कपिकी कृपा-विलोकनि, खानि सकल कल्यान की।।3।।

विनय पत्रिका-30

श्रीराम जय राम जय जय राम

हनुमत् उपासना

अनुष्ठान

श्री हनुमान जी अनेक अनुष्ठान ग्रन्थों में मिलते हैं। अनुष्ठान तभी सफल होते हैं, जब उन्हें सविधि किया जाये। अत: अनुष्ठान तो किसी जानकार से मिलकर सीखकर करना चाहिए। यज्ञ ऐसा विषय नहीं है कि पुस्तक पढ़कर अथवा पत्र-व्यवहार से जानकर किया जा सकता है। यहाँ केवल अनुष्ठान सम्बन्धी सामान्य नियमों की चर्चा की जा सकती है।

1. श्री हनुमान जी का अनुष्ठान करते समय आवश्यक है कि ब्रह्मचर्य का पूरा पालन किया जाये।
2. स्त्रियाँ भी श्री हनुमान जी की पूजा-आराधना कर सकती हैं। इनकी आराधना में स्त्री-पुरुष सब वर्णों का अधिकार है।
3. अनुष्ठान-काल में तेल लगाना, बाल बनवाना, नशा सेवन, मांसाहार, अण्डा, लहसुन-प्याज आदि अपवित्र वस्तुओं का सेवन वर्जित है। जिन पदार्थों में चर्बी पड़ती है उन साबुन, स्नो आदि का सेवन भी नहीं करना चाहिए।
4. सम्भव हो तो अनुष्ठान-काल में सब प्रकार की दाल, मूली, गाजर, शलजम, सेम, गोभी, शहद का त्याग करके एक समय भोजन करना चाहिए और दूसरे समय दूध-फल लेना चाहिए।
5. भूमि या तख्त पर सोना उत्तम माना जाता है।

सब हनुमत् मन्त्रों का बीज '**हूं**' है। '**हूं हनुमते नमः**' यह हनुमान जी का सामान्य मन्त्र है। इसके जप से भी बहुत लाभ होता है।

हनुमान चालीसा, हनुमान बाहुक, बजरंग बाण, संकटमोचनाष्टक, लांगूलोपनिषत् तथा वाल्मीकीय रामायण का सुन्दरकाण्ड-ये हनुमान जी

के अनुष्ठान में पाठ के प्रधान ग्रन्थ हैं। जो संस्कृत नहीं पढ़ सकते वे श्रीरामचरितमानस का सुन्दरकाण्ड नित्य पाठ के लिए आधार बनाते हैं।

हनुमान चालीसा का प्रतिदिन 108 पाठ लगातार 40 दिन करने से लोगों को कठिन संकट से परित्राण मिलते देखा गया है।

हनुमान बाहुक, संकटमोचन स्तोत्र का पाठ रोग से छूटने के लिए किया जाता है।

बजरंगबाण का अनुष्ठान शत्रु-भय से छुटकारा के लिए अथवा प्रेतबाधा दूर करने के लिए किया जाता है।

वाल्मीकीय रामायण के सुन्दरकाण्ड का पाठ स्वयं प्रतिदिन करने अथवा ब्राह्मण से 40 दिन, कम-से-कम 9 दिन करवा देने से शनि ग्रह की बाधा शान्त हो जाती है।

स्तुति

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम्।।

कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लंकाभयंकरम्।।

माता अञ्जना के लाड़ले, महावीर, श्रीजानकी जी के शोंक को नष्ठ करने वाले, अक्षयकुमार को मारने वाले, लंका को भय देने वाले कपीश की हम वन्दना करते हैं।

वीताखिलविषयेच्छं जातानन्दाश्रुपुलकमत्यच्छम्।

सीतापतिदूताद्यं वातात्मजमद्य भावये हृद्यम् ।।1।।

जिनके हृदय से सम्पूर्ण विषय-भोग कीं इच्छा निकल गयी है, (श्रीराम प्रेम में) जिनके नेत्रों से आनन्दाश्रु प्रवाह चल रहा है और शरीर अत्यन्त रोमाञ्चित हो रहा है, श्री सीता नाथ के उन प्रधान दूत पवन कुमार का मैं इस समय हृदय मे ध्यान करता हूँ।

तरूणारुणमुखकमलं करुणारसपूरितापांगम्।

संजीवनमाशासे मञ्जुलमहिमानमञ्जनाभाग्यम्।।2।।

बालसूर्य के समान अरुणमुख, करुणा रस से पूर्ण दृगाञ्चल वाले माता अञ्जना के घनीभूत-भाग्य-मूर्ति, मञ्जुल महिमाशाली, जीवनदाता (श्री हनुमान जी) से हम आशा करते हैं।

शम्बरवैरिशरातिगमम्बुजदल विपुललोचनोदारम्।

कम्बुगलमनिलदिष्टं बिम्बज्वलितोष्ठमेकमवलम्बे।।3।।

कामदेव के बाण जिन तक पहुँच नहीं पाते, उन कमलदल दीर्घ उदार लोचन, कम्बु कण्ठ, प्रज्जवलित बिम्बाधरोष्ठ पवन के परम सौभाग्य (श्रीहनुमानजी) का ही हम एकमात्र आश्रय लेते हैं।

दूरीकृतसीतार्तिः प्रकटीकृतरामवैभवस्फूर्तिः।

दारितदशमुखकीर्तिः पुरतो मम भातु हनुमतो मूर्तिः।।4।।

श्रीसीता-संकट को दूर करके, श्रीराम के ऐश्वर्य की स्फूर्ति प्रकट कर दशग्रीव की कीर्ति का दलन कर देने वाले हनुमानजी की मूर्ति मेरे सम्मुख प्रकट हो।

वानरनिकराध्यक्षं दानवकुलकुमुदरविकरसदृशम्।

दीनजनावनदीक्षं पवनतपः पाकपुञ्जमद्राक्षम्।।5।।

सम्पूर्ण वानर समूह के अध्यक्ष, दानव कुल कुमुदिनी के लिए (संकुचित करने वाले) सूर्य किरणों के समान, दीनजनों की रक्षा के व्रती, पवन की तपस्या के घनीभूत परिपाक (श्रीमारुति) का मैंने दर्शन किया।

एतत् पवनसुतस्य स्तोत्रं यः पठति पञ्चरत्नाख्यम्।

चिरमिह निखिलान्भोगान् भुक्त्वा श्रीरामभक्तिभाग्भवति।।6।।

श्रीमदाद्यशंकराचार्य

यह पञ्चरत्न नामक श्रीपवन कुमार का स्तोत्र जो पढ़ता है, वह बहुत दिनों तक सभी भोगों को भोगकर श्रीराम-भक्ति पाने का अधिकारी हो जाता है।

कदा सीताशोकत्रिशिखजलदं चाञ्जनिसुतं

चिरञ्जीव लोके भजकजनसंरक्षणकरम्।

अये वायोः सूनो रघुवरपदाम्भोजमधुप

प्रसीदेत्याक्रोशन् निमिषमिव नेष्यामि दिवसान्।।

श्री सीता शोकाग्नि को बुझाने के लिए मेघ के समान अञ्जनीनन्दन, संसार में चिरंजीवी, भजन करने वाले लोगों के संरक्षक को मैं कब 'हे पवनपुत्र, रघुवर-चरण-कमल- चञ्चरीक! (मुझ पर) प्रसन्न हो!'-ऐसा पुकारते हुए अपने दिनों को एक क्षण के समान व्यतीत करूँगा।

उल्लंघ्य सिन्धोः सलिलं सलिलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः।

आदाय तेनैव ददाह लंकां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्।।

खेल-खेल में समुद्र के अपार जल को लाँघकर जिन्होंने श्री जानकी जी की शोकाग्नि ली और उसी से लंका को भस्म कर दिया, उन अञ्जनि नन्दन को हम हाथ जोड़कर प्रणाम करते हैं।

पद्मरागमणिकुण्डलत्विषा पाटलीकृत कपोलमण्डलम्।

दिव्यदेहं कदलीवनान्तरे भावयामि पवनानन्दनम्।।

पद्मरागमणि के कुण्डलों की कान्ति से जिनके कपोल-मण्डल गुलाबी लग रहे हैं, कदली वन में बैठे उन दिव्य देह वाले श्रीपवन कुमार का हम ध्यान करते है।

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्।

वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम्।।

जहाँ-जहाँ श्रीरघुनाथ जी (के गुण, नाम, यश, लीला) का कीर्तन होता है, वहाँ-वहाँ हाथ जोड़कर सिर से लगाये, नेत्रों में अश्रु भरे (उपस्थित रहने वाले) राक्षसान्तक श्रीमारुति को (अवश्य) नमस्कार करना चाहिए।

श्री हनुमान जी का महामन्त्र

जयत्यतिबलो रामो लक्ष्मणश्च महाबलः।
राजा जयति सुग्रीवो राघवेणाभिपालितः।।

दासोऽहं कोसलेन्द्रस्य रामस्याक्लिष्टकर्मणः।
हनूमान् शत्रुसैन्यानां निहन्ता मारुतात्मजः।।

न रावणसहस्त्रं मे युद्धे प्रतिबलं भवेत्।
शिलाभिश्च प्रहरतः पादपैश्च सहस्त्रशः ।।

अर्दयित्वा पुरीं लंकामभिवाद्य च मैथिलीम्।
समृद्धार्थो गमिष्यामि मिषतां सर्वरक्षसाम्।।

-वाल्मीकीय रामायण, सुन्दरकाण्ड, 42, 33-36

अत्यन्त बलवान श्रीराम की जय हो! महान बलवान लक्ष्मण की जय हो! श्री राघव के द्वारा पालित राजा सुग्रीव की जय हो !!

मैं कोसलेन्द्र निष्पापकर्मा श्रीराम का दास, शत्रु सेनाओं का विनाशक मारुतनन्दन हनुमान हूँ।

शिलाओं से और बार-बार वृक्षों से जब मैं प्रहार करने लगता हूँ तो युद्ध में सहस्त्रों रावण मेरा सामना नहीं कर सकते।

लंकापुरी को रौंद कर, श्रीमैथिली को प्रणाम करके, सब राक्षसों के देखते हुए मैं अपना उद्देश्य पूरा करके जाऊँगा।

लाङ्गूलोपनिषत्

ॐ अस्य श्रीअनन्तघोर प्रलय ज्वालाग्निरौद्रस्य वीरहनुमत्साध्य-साधनाघोरमूलमन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीरामलक्ष्मणौ देवता। सौं बीजम्। अञ्जनासूनुरिति शक्तिः। वायुपुत्र इति कीलकम्। श्री हनुमत्प्रसादसिद्ध्यर्थं भूर्भुवस्स्वर्लोकसमासीनतत्वंपदशोधनार्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास –

ॐ अस्य श्रीअनन्तघोरप्रलयज्वालाग्निरौद्रस्य वीरहनुमत्साध्य-साधनाघोरमूलमन्त्रस्य ईश्वर ऋषये नमः **शिरसि**। अनुष्टुप् छन्दसे नमः **मुखे**। श्रीरामलक्ष्मणौ देवतायै नमः **हृदये**। सौं बीजं नमः **कण्ठकूपे**। अञ्जनासूनुरिति शक्तिः नमः **गुह्ये**। वायुपुत्र इति कीलकं नमः **नाभौ**। श्रीहनुमत्प्रसादसिद्ध्यर्थं भूर्भुवस्स्वर्लोकसमासीनतत्त्वं- पदशोधनार्थं जपे विनियोगः नमः **सर्वांगे**।

कर/अंग न्यास

ॐ भूः नमो भगवते दावानलकालाग्निहनुमते **अंगुष्ठाभ्यां नमः/हृदयाय नमः**। ॐ भुवः नमो भगवते चण्डप्रतापहनुमते **तर्जनीभ्यां नमः/शिरसे स्वाहा**। ॐ स्वः नमो भगवते चिन्तामणि-हनुमते **मध्यमाभ्यां नमः/शिखायै वषट**। ॐ महः नमो भगवते पातालगरुडहनुमते **अनामिकाभ्यां नमः/कवचाय हुम्**। ॐ जनः नमो

भगवते कालाग्निरुद्रहनुमते **कनिष्ठिकाभ्यां नमः नेत्रत्रयाय वौषट्।** ॐ तपः सत्यं नमो भगवते भद्र - जातिविकटरुद्रवीरहनुमते **करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः/ अस्त्राय फट्।** पाशुपतेन दिग्बन्धः।

ध्यान –

वज्रागं पिंगनेत्रं कनकमयलसत्कुण्डलाक्रान्तगण्डं
दम्भोलिस्तम्भसारप्रहरण विवशी भूतरक्षोऽधिनाथम्।
उद्यल्लांगूलघर्षप्रचलजलनिधिं भीमरूपं कपीन्द्रं
ध्यायन्तं रामचन्द्रं प्लवगपरिवृढं सत्त्वसारं प्रसन्नम्।।

मानसोपचार-पूजन –

श्री हनुमान जी के स्वरूप का चिन्तन करते हुए आगे लिखे प्रत्येक मंत्र के उच्चारण के साथ क्रमशः मनः कल्पित गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, पुनः मंत्र-पुष्प ध्यान द्वारा श्री हनुमान जी को अर्पित करें-

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि। ॐ रं तैजसात्मकं दीपं समर्पयामि। ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्य समर्पयामि। ॐ सं सर्वात्मकं मन्त्र-पुष्पं समर्पयामि।।

ॐ नमो भगवते दावानलकालाग्निहनुमते (जयश्रियो जयजीविताय) धवलीकृतजगत्त्रय वज्रदेह वज्रपुच्छ वज्रकाय वज्रतुण्ड वज्रमुख वज्रनख वज्रबाहो वज्ररोम वज्रनेत्र वज्रदन्त वज्रशरीर सकलात्मकाय भीमकर पिंगलाक्ष उग्र प्रलयकालरौद्र वीरभद्रावतार शरभसालुवभैरवदोर्दण्ड लंकापुरीदाहन उदधिलंघन दशग्रीवकृतान्त सीताविश्वास ईश्वरपुत्र अञ्जनागर्भसंभूत उदयभास्करबिम्बानलग्रासक देवदानवऋषिमुनिबन्द्य पाशुपतास्त्रब्रह्मास्त्रबैलवास्त्र - नारायणास्त्रकालशक्तिका

स्त्रदण्डकास्त्रपाशाघोरास्त्रनिवारण पाशुपतास्त्रब्रह्मास्त्र बैलवास्त्रनारायणास्त्रमृड सर्वशक्तिग्रसन ममात्मरक्षाकर परविद्यानिवारण आत्मविद्यासंरक्षक अग्निदीप्त अथर्वणवेदसिद्धस्थिरकालाग्निनिराहारक वायुवेग मनोवेग श्रीरामतारकपरब्रह्मविश्वरूपदर्शन लक्ष्मणप्राणप्रतिष्ठानन्दकर स्थल-जलाग्निमर्मभेदिन् सर्वशत्रून् छिन्धि छिन्धि मम वैरिणः खादय खादय मम संजीवनपर्वतोत्पाटन डाकिनीविध्वंसन सुग्रीवसख्यकरण निष्कलंक कुमारब्रह्मचारिन् दिगम्बर सर्वपाप सर्वग्रह कुमारग्रह सर्वं छेदय छेदय भेदय भेदय भिन्धि भिन्धि खादय खादय टंक टंक ताडय ताडय मारय मारय शोषय शोषय ज्वालय ज्वालय हारय हारय देवदत्तं नाशय नाशय अतिशोषय अतिशोषय मम सर्वंच हनुमन् रक्ष रक्ष ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हुं फट् घे घे स्वाहा।

ॐ नमो भगवते चण्डप्रतापहनुमते महावीराय सर्वदुःखविनाशनाय ग्रहमण्डलभूतमण्डलप्रेतपिशाचमण्डल - सर्वोच्चाटनाय अतिभयंकरज्वरमाहेश्वरज्वर-विष्णुज्वर-ब्रह्मज्वर-वेतालब्रह्मराक्षसज्वर-पित्तज्वर-श्लेष्मसान्निपातिकज्वर - विषमज्वर-शीतज्वर-पित्तज्वर-श्लेष्मसान्निपातिकज्वर-विषमज्वर - शीतज्वर - एकाहिकज्वर - द्व्याहिकज्वर - त्र्याहिकज्वर चातुर्थिकज्वर - अर्धमासिकज्वर-मासिकज्वर-षाण्मासिकज्वर-सांवत्सरिकज्वर-अस्थ्यन्तर्गतज्वर-महापस्मार-भ्रमिकापस्मारांश्च भेदय भेदय खादय खादय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हुं फट् घे घे स्वाहा।

ॐ नमो भगवते चिन्तामणिहनुमते अंगशूल-अक्षिशूल-शिरश्शूल-गुल्मशूल-उदरशूल-कर्णशूल-नेत्रशूल गुदशूल-कटिशूल-जानुशूल-जंघाशूल-हस्तशूल-पादशूल-गुल्फशूल-वातशू

ल-पित्तशूल-पायुशूल-स्तनशूल-परिणामशूल-परिधामशूल-परिबाणशूल-दन्तशूल-कुक्षिशूल सुमनश्शूल-सर्वशूलानि निर्मूलयनिर्मूलय दैत्यदानवकामिनी-वेतालब्रह्मराक्षसकोला-हलनागपाशानन्त-वासुकि-तक्षककार्कोटकलिंग-पद्मककुमुदज्व ल-रोगपाशमहामारीन् कालपाशविषं निर्विषं कुरु ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हुं फट् घे घे स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ग्लां ग्लीं ग्लूं ॐ नमो भगवते पातालगरुडहनुमते भैरववनगतगजसिंहेन्द्राक्षीपाशबन्धं छेदय छेदय प्रलयमारुत कालाग्निहनुमन् श्रृंखलाबन्धं विमोक्षय विमोक्षय सर्वग्रहं छेदय छेदय मम सर्वकार्याणि साधय साध्य मम प्रसादं कुरु कुरु मम प्रसन्न श्रीरामसेवक सिंह भैरवस्वरूप मां रक्ष रक्ष ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रां ह्रीं क्ष्मौं भ्रैं श्रां श्रीं क्लां क्लीं क्रां क्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ह्रां ह्रीं हुं ख ख जय जय मारण मोहन घूर्ण घूर्ण दम दम मारय मारय वारय वारय खे खे ह्रां ह्रीं ह्रूं हुं फट् घे घे स्वाहा।

ॐ नमो भगवते कालाग्निरौद्रहनुमते भ्रामय भ्रामय लव लव कुरु कुरु जय जय हस हस मादय मादय प्रज्जवलय प्रज्जवलय मृडय मृडय त्रासय त्रासय साहय साहय वशय वशय शामय शामय अस्त्रत्रिशूलडमरुखंगकालमृत्युकपालखट्वांगधर अभयशाश्वत हुं हुं अवतारय अवतारय हुं हुं अनन्तभूषण परमन्त्र-परयन्त्र-परतंत्र-शतसहस्त्र-कोटितेजःपुञ्जं भेदय भेदय अग्निं बन्धय बन्धय वायुं बन्धय बन्धय सर्वग्रहं बन्धय बन्धय अनन्तादिदुष्टनागानां द्वादशकुलवृश्चिकानामेकादशलूतानां विषं हन हन सर्वविषं बन्धय बन्धय वज्रतुण्ड उच्चाटय उच्चाटय मारणमोहन वशीकरणस्तम्भनजृम्भणाकर्षणोच्चाटनमिलनविद्वेषणयुद्धतर्कमम

णि बन्धय बन्धय ॐ कुमारीपदत्रिहरबाणोग्रमूर्तये ग्रामवासिने अतिपूर्वशक्ताय सर्वायुधधराय स्वाहा अक्षयाय घे घे घे घे ॐ लं लं लं घ्रां घ्रौं स्वाहा ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हुं फट् घे घे स्वाहा।।

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रैं श्रौं श्रः ॐ नमो भगवते भद्रजानिकटरुद्रवीरहनुमते टं टं टं लं लं लं लं देवदत्तदिगम्बराष्टमहाशक्त्यष्टांगधर अष्टमहाभैरवनवब्रह्मस्वरूप दशविष्णुरूप एकादशरुद्रावतार द्वादशार्कतेजः त्रयोदशसोममुख वीरहनुमन् स्तंभिनीमोहिनीवशीकरिणीतन्त्रैकसावयव नगरराजमुखबन्धन बलमुखमकरमुखसिंहमुखजिह्वामुखानि बन्धय बन्धय स्तम्भय स्तम्भय व्याघ्रमुखसर्ववृश्चिकाग्निज्वालाविषं निर्गमय निर्गमय सर्वजनवैरिमुखं बन्धय बन्धय पापहर वीर हनुमान् ईश्वरावतार वायुनन्दन अञ्जनासुत बन्धय बन्धय श्रीरामचन्द्रसेवक ॐ ह्रां ह्रां ह्रां आसय आसय ह्रीं ह्रां घ्रीं क्रीं यं भै म्रं मः हट् हट् खट् खट् सर्वजन-विश्वजन-शत्रुजन-वश्यजन-सर्वजनस्य दृशं लं लां श्रीं ह्रां ह्रीं मनः स्तम्भय स्तम्भय भञ्जय भञ्जय अद्रि ह्रीं व हीं हीं मे सर्व हीं हीं सागरहीं वं वं सर्वमन्त्रार्थाथर्वणवेदसिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा। श्रीरामचन्द्र उवाच हीं। श्रीमहादेव उवाच। श्रीवीरभद्रस्तौ उवाच। त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।। ॐ हरि मर्कट मर्कटाय स्वाहा।

।। इत्याथर्वणरहस्ये लाङ्गूलोपनिषत् सम्पूर्ण।।

हनुमन्मन्त्रचमत्कारानुष्ठान

'हनुमन्मन्त्रचमत्कारानुष्ठान' - पद्धति के मन्त्रों की अनुष्ठान- विधि इस प्रकार है-शुभ मुहूर्त में उक्त पद्धति के प्रत्येक मन्त्र को अलग-अलग ग्यारह-ग्यारह हजार बार जप करके सिद्ध कर लेना चाहिये। तत्पश्चात् आवश्यकता पड़ने पर मनुष्य को स्वयं अपने अथवा दूसरे के कार्य के लिये 'हनुमन्मन्त्रचमत्कारानुष्ठान' के प्रत्येक मन्त्र का ग्यारह-ग्यारह हजार जप करके पीछे प्रत्येक मन्त्रका दशांश ग्यारह सौ (1100) हवन करना चाहिये। अनुष्ठानकर्ता को चाहिये कि वह जिस कार्य के लिये जप और हवन करे उस कार्य का नामोच्चारण संकल्प में अवश्य करें।

'हनुमन्मन्त्रचमत्कारानुष्ठान' के मन्त्र इस प्रकार हैं-

1. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय वायुसुताय अञ्जनी-गर्भ-सम्भूताय अखण्डब्रह्मचर्यव्रतपालनतत्पराय धवलीकृतजगस्त्रितयाय ज्वलदग्निसूर्यकोटिसमप्रभाय प्रकटपराक्रमाय आक्रान्तदिङ्मण्डलाय यशोवितानाय यशोऽलंकृताय शोभिताननाय महासामर्थ्याय महातेजः-पुञ्जविराजमानाय श्रीरामभक्तितत्पराय श्रीरामलक्ष्मणानन्दकारणाय कपिसैन्यप्राकाराय सुग्रीवसख्यकारणाय सुग्रीवसाहाय्यकारणाय ब्रह्मास्त्रब्रह्मशक्तिग्रसनाय लक्ष्मणशक्तिभेदनिवारणाय शल्यविशल्यौ - षधिसमानयनाय बालोदितभानुमण्डलग्रसनाय अक्षकुमारच्छेदनाय वनरक्षाकर - समूहविभञ्जनाय

द्रोणपर्वतोत्पाटनाय स्वामिवचन- सम्पादितार्जुनसंयुगसंग्रामाय गम्भीर-शब्दोदयाय दक्षिणाशामार्तण्डाय मेरुपर्वतपीठिकार्चनाय दावानलकालाग्निरुद्राय समुद्रलङ्घनाय सीताऽऽश्वासनाय सीतारक्षकाय राक्षसीसंघविदारणाय अशोकवन-विदारणाय लङ्कापुरीदहनाय दशग्रीवशिरःकृन्तकाय कुम्भकर्णादिवध-कारणाय मेघनादहोमविध्वंसनाय इन्द्रजिद्वधकारणाय सर्वशास्त्र-पारंगताय सर्वग्रहविनाशकाय सर्वज्वरहराय सर्वभयनिवारणाय सर्वकष्ट निवारणाय सर्वापत्तिनिवारणाय सर्वदुष्टादिनिबर्हणाय सर्वशत्रुच्छेदनाय भूतप्रेतपिशाचडाकिनीशाकिनीध्वंसकाय सर्वकार्य-साधकाय प्राणिमात्ररक्षकाय रामदूताय स्वाहा।

2. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय विश्वरूपाय अमितविक्रमाय प्रकटपराक्रमाय महाबलाय सूर्यकोटिसमप्रभाय रामदूताय स्वाहा।

3. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय रामसेवकाय रामभक्तितत्पराय रामहृदयाय लक्ष्मणशक्तिभेदनिवारणाय लक्ष्मणरक्षकाय दुष्टनिबर्हणाय रामदूताय स्वाहा।

4. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय सर्वशत्रुसंहरणाय सर्वरोगहराय सर्ववशीकरणाय रामदूताय स्वाहा।

5. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय आध्यात्मिकाधिदैविका-धिभौतिकतापत्रयनिवारणाय रामदूताय स्वाहा।

6. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय देवदानवर्षिमुनिवरदाय रामदूताय स्वाहा।

7. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय भक्तजनमनःकल्पना-कल्पद्रुमाय दुष्टमनोरथस्तम्भनाय प्रभञ्जनप्राणप्रियाय महाबल-

पराक्रमाय महाविपत्तिनिवारणाय पुत्रपौत्रधनधान्यादिविविध-सम्पत्प्रदाय रामदूताय स्वाहा।

8. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय वज्रदेहाय वज्रनखाय वज्रमुखाय वज्ररोम्णे वज्रनेत्राय वज्रदन्ताय वज्रकराय वज्रभक्ताय रामदूताय स्वाहा।

9. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय परयन्त्रमन्त्रतन्त्रत्राटकनाशकाय सर्वज्वरच्छेदकाय सर्वव्याधिनिकृन्तकाय सर्वभयप्रशमनाय सर्वदुष्ट- मुखस्तम्भनाय सर्वकार्यसिद्धिप्रदाय रामदूताय स्वाहा।

10. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय देवदानवयक्षराक्षस-भूतप्रेतपिशाचडाकिनीशाकिनीदुष्टग्रबन्धनाय रामदूताय स्वाहा।

11. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय पञ्चवदनाय पूर्वमुखे सकलशत्रुसंहारकाय रामदूताय स्वाहा।

12. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय पञ्चवदनाय दक्षिणमुखे करालवदनाय नारसिंहाय सकलभूतप्रेतदमनाय रामदूताय स्वाहा।

13. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय पञ्चवदनाय पश्चिममुखे गरुडाय सकलविघ्ननिवारणाय रामदूताय स्वाहा।

14. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय पञ्चवदनाय उत्तरमुखे आदिवराहाय सकलसम्पत्कराय रामदूताय स्वाहा।

15. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय ऊर्ध्वमुखे हयग्रीवाय सकलजनवशीकरणाय रामदूताय स्वाहा।

16. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय सर्वग्रहान् भूतभविष्यद्वर्तमानान् समीपस्थान् सर्वकालदुष्टबुद्धीनुच्चाटयोच्चाटय परबलानि क्षोभय क्षोभय मम सर्वकार्याणि साधय साधय स्वाहा।

17. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय परकृतयन्त्रमन्त्रपराहंकार-भूतप्रेतपिशाचपरदृष्टिसर्वविघ्नतर्जनचेटकविद्यासर्वग्रहभयं निवारय निवारय स्वाहा।

18. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय डाकिनीशकिनीब्रह्मराक्षस-कुलपिशाचोरुभयं निवारय निवारय स्वाहा।

19. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय भूतज्वरप्रेतज्वरचातुर्थिक-ज्वरविष्णुज्वरमहेशज्वरं निवारय निवारय स्वाहा।

20. ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय अक्षिशूलपक्षशूल-शिरोऽभ्यन्तरशूलपित्तशूलब्रह्मराक्षसशूलपिशाचकुलच्छेदनं निवारय निवारय स्वाहा।

कुछ अन्य अनुभूत मन्त्र

श्रीइष्टदेवकी कृपा से कुछ अनुभूत मन्त्र नीचे दिये जा रहे हैं। समुत्सुक लोग इनसे लाभ उठायें-

1. प्रेत-बाधा-निवारण के लिये-

ॐ दक्षिणमुखाय पञ्चमुखहनुमते करालवदनाय नारसिंहाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सकलभूतप्रेतदमनाय स्वाहा।

(पञ्चमुखहनुमत्कवचम् 28)

यह मन्त्र कम-से-कम दस हजार जप करने पर सिद्ध हो जाता है। मन्त्र-जापके बाद अष्टगन्ध से हवन करना चाहिये।

2. विष उतारने के लिये

ॐ पश्चिममुखाय गरुडाननाय पञ्चमुखहनुमते मं मं मं मं मं सकलविषहराय स्वाहा।

(पञ्चमुखहनुमत्कवचम् 29)

यह मन्त्र दीपावली के दिन अर्धरात्रि में घी का दीपक जलाकर हनुमानजीको साक्षी करके दस हजार जप लेने से सिद्ध हो जाता है। पुन: बिच्छू, बर्रे आदि विषधारी जीवों द्वारा त्रस्त होने पर इस मन्त्र को उच्च स्वर से उच्चारण करते हुए उस अङ्ग का स्पर्श करे। कई बार ऐसा करने पर विष उतर जाता है।

3. शत्रु-संकट-निवारण के लिये

ॐ पूर्वकपिमुखाय पञ्चमुखहनुमते टं टं टं टं टं सकलशत्रु-संहरणाय स्वाहा।

(पञ्चमुखहनुमत्कवचम् 27)

इस मन्त्र के सिद्ध कर लेने पर शत्रु-भय दूर हो जाता है। यह केवल 15000 मन्त्र-जप से सिद्ध हो जाता है। आवश्यकता है- विश्वास और श्रद्धा की।

4. महामारी, अमङ्गल, ग्रह-दोष एवं भूत-प्रेतादि-नाश के लिये -

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ॐ नमो भगवते महाबलपराक्रमाय भूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनी- डाकिनीयक्षिणीपूतनामारी-महामारीराक्षसभैरववेतालग्रहराक्षसादिकान् क्षणेन हन हन भञ्जय भञ्जय मारय मारय शिक्षय शिक्षय महामाहेश्वररुद्रावतार ॐ हुं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते हनुमदाख्याय रुद्राय सर्वदुष्टजनमुख- स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ठंठंठं फट् स्वाहा।

यह मन्त्र मंगलवार को दिनभर व्रत रखने के बाद अर्धरात्रि में हनुमान जी के मन्दिर में सात हजार जप करने से सिद्ध हो जाता है। सिद्धि के बाद हनुमान जी के समक्ष दशांश हवन करना चाहिये।

विशेष : हनुमान जी के उपासकों को चाहिये कि उपर्यक्त मन्त्रों में से जिस मन्त्र की सिद्धि करनी हो, उसे तत्क्षण भोजपत्र पर लाल चन्दन या स्याही से लिख लें, पुनः उसे अभिमन्त्रित करके तावीज में भरकर धारण कर लें। यदि यह काम विश्वास और श्रद्धा से किया गया तो अवश्य ही रामवाण सिद्ध होगा।

1. विद्यार्थियों के लिये हनुमान जी की सिद्धि विशेष सहज है; क्योंकि उन पर मारुति शीघ्र कृपा करते हैं। उनसे पवित्रता तथा श्रद्धा की अपेक्षा की जाती है।
2. शनिवार के दिन हनुमान जी को तेल चढ़ाने से शनैश्चर का प्रकोप शान्त हो जाता है।

अन्य सविधि अनुष्ठान

भगवान श्रीकृष्ण की प्रेरणा से अर्जुन ने इस मन्त्र का अनुष्ठान किया था। श्री हनुमान जी ने प्रसन्न होकर अर्जुन को दर्शन दिया था और युद्ध के समय उनके रथ पर स्थित होकर रथ को भस्म होने से बचाया था। उन्हीं के कारण कर्ण के बाणों से अर्जुन का रथ बहुत पीछे नहीं हटता था। वह मन्त्र है – '**ॐ हं हनुमते रुद्रात्मकाय हुं फट्।**' यह द्वादशाक्षर मन्त्र है। नदी के तट पर, भगवान के मन्दिर में, निर्जन स्थान में, पर्वत या वन में इस मन्त्र की साधना करनी चाहिए। इस मन्त्र का ध्यान निम्नलिखित है –

महाशैलं समुत्पाट्य धावन्तं रावणं प्रति।
तिष्ठ तिष्ठ रणे दुष्ठ घोररावं समुत्सृजन।।
लाक्षारसारुणं रौद्रं कालान्तकयमोपमम्।
ज्वलदग्निलसन्नेत्रं सूर्यकोटिसमप्रभम्।।
अङ्गदाद्यैर्महावीरैर्वेष्टितं रुद्ररूपिणाम्।

एवंरूपं हनूमन्तं ध्यात्वा यः प्रजपेन्मनुम्।
लक्षजपात् प्रसन्नः स्यात् सत्यं ते कथितं मया।।

श्रीहनुमान जी बड़ा भारी पर्वत उखाड़कर रावण की ओर दौड़ रहे हैं कि रे दुष्ट! युद्ध में थोड़ी देर ठहर जा। लाक्षारस के समान अरुण वर्ण और प्रलयकालीन यमराज के समान भीषण श्रीहनुमान जी की आँखें धधकती हुई आग के समान जाज्वल्यमान हो रही हैं। करोड़ों सूर्य की भाँति चमकता हुआ शरीर है। रुद्ररूपी हनुमान को अङ्गदादि महावीरों ने घेर रखा है। इस प्रकार हनुमान का ध्यान करके मन्त्र का जप करना चाहिए। एक लाख जप पूरा होने पर हनुमान जी साधक पर प्रसन्न होते हैं। श्री शिवजी कहते हैं कि हे पार्वती! यह बात सर्वथा सत्य है। इस मन्त्र में ध्यान की प्रधानता है, एकमात्र ध्यान से ही निधि प्राप्त हो जाती है।

प्रात:काल नदी में स्नान करके कुशासन बिछाकर तट पर बैठ जाये और प्राणायाम एवं कराङ्गन्यास करे। तत्पश्चात् मूलमन्त्र से आठ पुष्पाञ्जलि देकर सीता सहित भगवान रामचन्द्र का ध्यान करते हुए ताम्रपत्र पर श्री हनुमान जी का यन्त्र अंकित करे। पहले केशर के साथ अष्टदल पद्म बनाना चाहिए। रक्तचन्दन की कलम से एवं घिसे हुए रक्तचन्दन से उसका निर्माण करना चाहिए। पद्म की कर्णिका में श्री हनुमान जी का आवाह्न करे और अर्घ्य, पाद्य आदि देकर मूल मन्त्र से गन्ध, पुष्प आदि समर्पण करे। कमल के आठ दलों पर पूर्व से लेकर ईशान कोण तक क्रमशः सुग्रीव, लक्ष्मण, अंगद, नल, नील, जाम्बवान्, कुमुद और केशरी की पूजा करें। दलों के अग्र भाग में वानरों के लिए आठ पुष्पाञ्जलि दे। ध्यान करके एक लाख जप करे, जितने दिनों तक एक लाख की संख्या पूरी न हो जाय उतने दिनों तक ऐसा ही करना चाहिए। आखिरी दिन महान् पूजा करनी चाहिए। उस दिन एकाग्रचित्त से तब तक जप करें जब तक श्री हनुमान जी के दर्शन न हो जायें। साधक की दृढ़ता देखकर श्री हनुमान जी प्रसन्न होते हैं और आधी रात को साधक के सामने आकर दर्शन देते हैं। साधक की इच्छा के अनुसार वर देते हैं और उसे कृतकृत्य कर देते हैं। यह साधन बड़ा

ही पवित्र और देवताओं के लिए भी दुर्लभ है।

श्री हनुमान जी का एक दूसरा मन्त्र है '**ॐ हं पवननन्दनाय स्वाहा**' यह दशाक्षर मन्त्र है। इसको कल्पवृक्षस्वरूप कहते हैं, इस मन्त्र के जप से सारी अभिलाषाएँ पूरी होती हैं। इसकी विधि निम्नलिखित है। इसका नाम वीरसाधन है और यह अत्यन्त गोपनीय है।

ब्रह्म मुहूर्त में उठकर नित्यकृत्य करके नदी तट पर जाना चाहिए। वहाँ तीर्थ का आवाह्न करके स्नान करते समय आठ बार मूल मन्त्र का जप करना चाहिए। तत्पश्चात् बारह बार मन्त्र पढ़कर अपने ऊपर जल छिड़कना चाहिए। फिर वस्त्र पहनकर नदी के किनारे या पर्वत पर बैठकर, **ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः** इत्यादि के करन्यास और **ह्रां हृदयाय नमः** इत्यादि से अंगन्यास करे। इसकी प्राणायामविधि भी अलग है। अकार से लेकर अः तक सब स्वरों का उच्चारण करके बायीं नासिका से पूरक करना चाहिए। क से लेकर म तक के पाँच वर्ग के अक्षरों का उच्चारण करके कुम्भक करना चाहिए और य से लेकर अवशेष वर्गों का उच्चारण करके दाहिनी नासिका से रेचक करना चाहिए। इस प्रकार तीन प्राणायाम करके मूलमन्त्र के अक्षरों से अंगन्यास करे। इसका ध्यान निम्नलिखित है-

ध्यायेद् रणे हनूमन्तं कपिकोटिसमन्वितम्।
धावन्तं रावणं जेतुं दृष्ट्वा सत्वरमुत्थितम्।।
लक्ष्मणं च महावीरं पतितं रणभूतले।
गुरुं च क्रोधमुत्पाद्य गृहीत्वा गुरुपर्वतम्।।
हाहाकारैः सदर्पैश्च कम्पयन्तं जगत्त्रयम्।
आब्रह्माण्डं समाव्याप्य कृत्वा भीमं कलेवरम्।।

इति ध्यात्वा षट् सहस्त्रं जपेत्।

वीरवर लक्ष्मण रणक्षेत्र में गिरे हुए हैं, यह दृश्य देखकर श्रीहनुमान् जी करोड़-करोड़ वानरों के साथ रणभूमि में आकर रावण को पराजित

करने के लिये बड़े वेग से आगे बढ़ रहे हैं। अतिशय क्रोध के कारण अपनी हुंकारध्वनि से त्रिभुवन को कम्पित करते हुए हाथ में विशाल शैल लेकर आक्रमण करने जा रहे हैं। इस समय वे ब्रह्माण्डव्यापी भयंकर शरीर प्रकट करके स्थित हैं।ध्यान के पश्चात् मन्त्र का छः हजार जप करना चाहिए। इस मन्त्र का छः दिन तक जप करने के पश्चात सातवें दिन दिनरात जप करना पड़ता है। जप करने से रात के चौथे पहर में बड़ा भय दिखाकर श्री हनुमान् ज़ी साधक के सामने प्रकट होते हैं। जो साधक धीर भाव से स्थित रह जाता है उसे वे उसकी इच्छा के अनुसार लौकिक सम्पत्ति अथवा पारलौकिक सम्पत्ति या दोनों देते हैं। ज्ञान देते हैं अथवा भगवत्प्राप्ति का मार्ग बताते हैं।

न्यास

ॐ ह्रां अञ्जनीसुताय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं रुद्रमूर्तये तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं रामदूताय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं वायुपुत्राय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं अग्निगर्भाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः ब्रह्मास्त्रनिवारणाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ॐ अञ्जनीसुताय ह्रदयाय नमः। ॐ रुद्रमूर्तये शिर से स्वाहा। ॐ रामदूताय शिखायै वषट्। ॐ वायुपुत्राय कवचाय हुम्। ॐ अग्निगर्भाय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ब्रह्मास्त्रनिवारणाय अस्त्राय फट्।।

ध्यान

ध्यायेद् बालदिवाकरद्युतिनिभं देवारिदर्पापहं
देवेन्द्रप्रमुखं प्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा।
सुग्रीवादिसमस्तवानरयुतं सुव्यक्ततत्त्वप्रियं

संरक्तारणलोचनं पवनजं पीताम्बरालंकृतम्।।

(आनन्दरामा० मनोहर० 13)

'प्रातःकालीन सूर्य के सदृश जिनकी शरीर-कान्ति है, जो राक्षसों का अभिमान दूर करने वाले देवताओं में एक प्रमुख देवता, लोक-विख्यात यशस्वी और अपनी असाधारण शोभा से देदीप्यमान हो रहे हैं, सुग्रीव आदि सभी वानर जिनके साथ हैं, जो सुव्यक्त तत्त्व के प्रेमी हैं, जिनकी आँखें अतिशय लाल-लाल हैं और जो पीले वस्त्रों से अलंकृत हैं, उन पवनपुत्र श्रीहनुमान जी का ध्यान करना चाहिये।'

नीचे जो मन्त्र दिये जा रहे हैं, सबका या तो एक बार पाठ कर ले या उनमें से एक मन्त्र चुनकर अपने कार्य के अनुसार पाठ करके शेष मन्त्रों को पढ़कर हवन करें।

कार्यसिद्धि के लिये –

ॐ नमो हनुमते सर्वग्रहान् भूतभविष्यद्वर्तमानान् दूरस्थ-समीपस्थान् छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वकालदुष्टबुद्धी-नुच्चाटयोच्चाटय परबलान् क्षोभय क्षोभय मम सर्वकार्याणि साधय साधय। ॐ नमो हनुमते ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट्। देहि ॐ शिव सिद्धिं; ॐ ह्रां ॐ ह्रीं ॐ ह्रूं ॐ ह्रैं ॐ ह्रौं ॐ ह्रः स्वाहा।

सर्वविघ्ननिवारण के लिये–

ॐ नमो हनुमते परकृतयन्त्रमन्त्रपराहंकारभूतप्रेत-पिशाचपरदृष्टिसर्वविघ्नटार्जनचेकुविद्यासर्वोग्रभयान् निवारय निवारय वध वध लुण्ठ लुण्ठ पच पच विलुञ्च विलुञ्च किलि

किलि-किलि सर्वकुयन्त्राणि दुष्टवाचं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा।

सर्वदुष्टग्रहनिवारण के लिये—

ॐ नमो हनुमते पाहि पाहि एहि एहि सर्वग्रहभूतानां शाकिनीडाकिनीनां विषमदुष्टानां सर्वेषामाकर्षयाकर्षय मर्दय मर्दय छेदय छेदय मृत्युं मारय मारय भयं शोषय शोषय प्रज्वल प्रज्वल भूतमण्डलपिशाचमण्डलनिरसनाय भूतज्वरप्रेतज्वर-चातुर्थिकज्वरविष्णुज्वरमाहेश्वरज्वरान् छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि अक्षिशूलपक्षशूल- शिरोऽभ्यन्तरशूलगुल्मशूलपित्तवात-शूलब्रह्मराक्षसकुलपिशाचकुलप्रयलनागकुलच्छेदनंविषं निर्विषं कुरु कुरु झटिति झटिति ॐ ह्रां सर्वदुष्टग्रहान्निवारणाय स्वाहा।

ॐ नमो हनुमते पवनपुत्राय वैश्वानरमुखाय पापदृष्टिचोर-दृष्टिपाषण्डदृष्टि हनुमदाज्ञा स्फुर ॐ स्वाहा।

इस प्रकार मन्त्र-जप पूर्ण होने पर दशांश जप या हवन करके ब्राह्मणों को भोजन भी कराना चाहिये।

प्रेत-बाधा-निवारण के सम्बन्ध में अनुष्ठान

(1) प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर।।

प्रतिदिन 11 माला के हिसाब से 49 दिनों तक इसका जप करना चाहिये।

(2) श्रीहनुमान जी की मूर्ति या चित्र के सामने बैठकर पञ्चोपचार से उनकी पूजा करके कम-से-कम सात शनिवार तक प्रत्येक शनिवार को हनुमान चालीसा के एक सौ पाठ करें।

(3) इस (64) यन्त्र को भोजपत्र पर लाल चन्दन से लिखकर, मँढ़वाकर सभी कमरों में टाँग दें।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

ॐ ॐ ॐ

२४	३१	२	७
६	३	२८	२७
३०	२५	८	१
५	५	२६	२९

ॐ ॐ ॐ

(4) प्रेत की सद्गति के लिये भागवत का सप्ताह-अनुष्ठान के रूप में एक पाठ और श्री विष्णु सहस्र नाम के 108 पाठ कराने चाहिये।

अनुभवसिद्ध प्रयोग

किसी भी परोपकार-भावना या उचित एवं योग्य स्वकार्यकी सिद्धि के लिये इसका प्रयोग किया जा सकता है। किसी भी मास में शुक्ल पक्ष के मंगलवार को इसका श्रीगणेश कर सकते हैं, परन्तु उस दिन रिक्ता (4-9-14) तिथि एवं प्रयोगकर्ता की राशि से चौथे, आठवें या बारहवें चन्द्रमा का होना निषिद्ध है। जननाशौच या मरणाशौच में भी इसका प्रारम्भ नहीं करना चाहिये। यदि प्रयोग-काल में ऐसा कोई संयोग आ ही जाये तो किसी कर्मनिष्ठ कुलीन ब्राह्मण के द्वारा इसे पूर्ण कराना चाहिये, बीच में छोड़ना उचित नहीं है।

पुरुषों के अतिरिक्त ऐसी स्त्रियाँ भी इसका अनुष्ठान कर सकती है,

जिनका प्रौढ़ावस्था के बाद प्राकृतिक रूप से मासिक धर्म सदा के लिये बंद हो चुका हो। प्रयोग के समय क्षौरादि कर्म का त्याग एवं सात्त्विक आहार के साथ ब्रह्मचर्य का पालन करना अनिवार्य है। एक ही समय भोजन किया जाये तो अति उत्तम है, पर वह अनिवार्य नहीं है; परन्तु दो बार से अधिक अन्न ग्रहण करना वर्जित है।

प्रयोग-काल के बीच में ही यदि देव-कृपावश संकल्पित कार्य की सिद्धि हो जाये तो भी प्रयोग को पूरा करना ही चाहिये; अन्यथा बने हुए कार्य के बिगड़ने की सम्भावना रहती है।

प्रयोगविधि-

प्रयोग प्रारम्भ के लिये शुक्ल पक्ष के जिस मंगलवार का निश्चय किया जाये, उसके पहले दिन सोमवार को सवा पाव अच्छा गुड़, एक छटाँक भुने हुए अच्छे चने और सवा पाव गाय का शुद्ध घी संग्रह कर ले। गुड़ के छोटे-छोटे इक्कीस टुकड़े कर ले, शेष वैसे ही रहने दे। स्वच्छ रूई की 22 फूल-बत्तियाँ बनाकर घी में भिगो दे। तीनों वस्तुएँ अर्थात् गुड़, चने और बत्ती सहित की अलग-अलग तीन स्वच्छ एवं शुद्ध पात्रों में रखकर घर के किसी एक स्वच्छ ऊँचे स्थान या अलमारी में ढककर रख दे, जहाँ बच्चों के हाथ न पहुँच सकें। उनके पास ही एक दियासलाई और एक अन्य छोटा पात्र-छन्नी आदि जिसमें प्रतिदिन उपर्युक्त वस्तुएँ ले जायी जा सकें, भी रख दे, जिससे प्रतिदिन इधर-उधर पात्र की खोज न करनी पड़े। बस, सामग्री तैयार है। शेष रहा केवल एक स्वच्छ पवित्र श्री हनुमान जी का मन्दिर जो गाँव या शहर के कोलाहल से दूर जितने भी निर्जन एवं एकान्त स्थान में हो, उतना ही अच्छा है; अन्यथा अपने निवास स्थान से कम-से-कम सवा-डेढ़ फर्लांग दूर होना तो अनिवार्य ही है।

जिस मंगलवार से प्रयोग आरम्भ करना हो, उस दिन हो सके तो ब्राह्म-मुहूर्त में अन्यथा सूर्योदय के पहले अवश्य उठ जाना चाहिये। फिर

शौचादि से निवृत्त हो स्नान कर कपड़े पहन ललाट पर रोली चन्दन आदि लगाकर सबसे पहले वहाँ जाये जहाँ तीनों पात्रों में गुड़, चने और घी-बत्ती रखी है। वहाँ पहले से ही रखे हुए छन्नी आदि खाली पात्र में एक गुड़ की डली, 11 चने, एक घृत-बत्ती और दियासलाई लेकर पवित्र धुली हुई रूमाल आदि किसी स्वच्छ पवित्र वस्त्र से उसे ढक ले। वहाँ से चलते समय से मन्दिर में श्री हनुमान जी की मूर्ति के सम्मुख पहुँचने तक न तो पीछे, न दायें-बायें ही घूमकर देखे और न छन्नी उठाने के बाद घर में, रास्ते में या मन्दिर में किसी से एक शब्द भी बोले, चाहे कोई कितने भी आवश्यक कार्य के लिये आवाज क्यों न देता हो। इस प्रकार पूर्ण रूप से एकदम मौन रहे।

बिना जूता-चप्पल पहने श्री हनुमान जी के सम्मुख पहुँचकर बिना इधर-उधर देखे मौन धारण किये हुए ही पहले घी-बत्ती जलाये, फिर 11 चने और 1 गुड़ की डाली श्री हनुमान जी के सामने रखकर साष्टाङ्ग प्रणाम कर हाथ जोड़ पूर्वसंकल्पित अपनी मनःकामना की सिद्धि के लिये मन-ही-मन श्रद्धा, विश्वास, भक्ति एवं प्रेमपूर्वक उनसे प्रार्थना करे। फिर यदि कोई अन्य प्रार्थना, स्तुति, श्री हनुमान चालीसा आदि का पाठ करना चाहे तो मौन ही रहकर करे। घर की ओर जाने के लिये मूर्ति के सामने से हटने के बाद जब तक अपने घर पहुँचकर वह खाली पात्र निश्चित स्थान पर न रख दे, तब तक पीछे या दायें-बायें घूमकर न तो देखे और न किसी से एक शब्द भी बोले, मौनी ही बना रहे। फिर छन्नी रखकर सात बार 'राम-राम' कहकर मौन भङ्ग करे। इसी क्रम से 21 दिनों तक लगातार एक-सा प्रयोग करता रहे। रात्रि में सोते समय भी हनुमान चालीसा का 11 पाठ करके अपनी मनःकामना सिद्धि के लिये प्रार्थना करना अनिवार्य है।

बाईसवें दिन मंगलवार को नित्य कर्म से निवृत्त हो सवा सेर आटे का एक रोट बनाकर गोबर की अग्नि में सेंककर पका ले, यदि असुविधा हो तो पाव-पाव की पाँच रोटी बनाकर उनमें आवश्यकतानुसार गाय का शुद्ध घी

और अच्छा गुड़ मिलाकार उनका चूरमा बना ले। 21 डलियों के बाद जो गुड़ बचा हो, उसे चूरमे में मिला दे। फिर चूरमे को थाली में रखकर बचे हुए सारे चने तथा शेष घी सहित 22वीं अन्तिम बत्ती लेकर प्रतिदिन की तरह ही मौनपूर्वक बिना पीछे या दायें-बायें देखे मन्दिर में जाय और बत्ती जलाकर श्री हनुमान जी को चने एवं चूरमे का भोग लगाकर उसी प्रकार घर को वापस आये और घर में प्रवेश करने के बाद ही मौन भङ्ग करे। प्रयोगकर्ता उस दिन दोनों समय केवल उसी चूरमे का भोजन करे। शेष चूरमे को प्रसाद रूप में बाँट दे।

ऐसा करने से श्री हनुमान जी की कृपा से मनोरथ अवश्य सिद्ध होता है। किसी कारणवश प्रयोग में भूल भी हो जाये तो निराश न हो, उसे फिर करे। श्री हनुमान जी श्रद्धालु, विश्वासी, आस्तिक, सच्चे साधक की मन:कामना अवश्य पूर्ण करते हैं, यह परीक्षित अनुभवसिद्ध अचूक प्रयोग है।

श्री हनुमान जी का स्वप्न में दर्शन-
एक अनुष्ठान

इस अनुष्ठान के नियम बहुत सरल हैं। यह अनुष्ठान कुल 81 दिन का है। अच्छा मुहूर्त देखकर इसे प्रारम्भ करना चाहिये। अनुष्ठान-काल में ब्रह्मचर्य-पालन अनिवार्य है तथा क्षौर, नख-कृन्तन, मद्यपान और मांसहार सर्वथा निषिद्ध हैं। अनुष्ठानारम्भ के दिन प्रात:काल उठकर शौच, मुखमार्जन और स्नान के अनन्तर शुद्ध वस्त्र पहनकर एक लोटा जल लेकर हनुमान जी के मन्दिर में जाये और उस जल से हनुमान जी की मूर्ति को स्नान कराये। प्रथम दिन एक दाना उड़द हनुमान जी के सिर पर रख कर ग्यारह प्रदक्षिणा करे। बाद में नमस्कार करके मन-ही-मन अपनी कामना

श्री हनुमान जी के सामने रखे तथा उड़द का दाना लेकर घर लौट आये और उसे अलग रख दे। दूसरे दिन से एक-एक उड़क का दाना बढ़ाते रहना चाहिये। 41वें दिन से एक-एक दाना कम करते जाना चाहिये। जैसे-42वें दिन 40, 43वें दिन 39 और 81वें दिन 1 दाना। 81 दिन का यह अनुष्ठान पूर्ण होने पर उसी दिन रात को श्री हनुमान जी स्वप्न में दर्शन देकर साधक की कामना-पूर्ति करते हैं 81 दिन तक जो उड़द के दाने अलग जमा किये गये थे, उन्हें नदी में बहा देना चाहिये।

शाबर-मन्त्र और उनके प्रभाव

'बिस्वरूप रघुवंसमनि करहु बचन बिस्वास।'

यह सम्पूर्ण विश्व भगवान् का स्वरूप है-भगवान् ही है। उसी प्रकार शब्दमात्र भगवन्नाम है। जगत् का मूल कारण शब्द है- यह बात 'स्फोटवाद' प्रतिपादित करता है। प्रत्येक शब्द एक कम्पन उत्पन्न करता है और प्रत्येक कम्पन एक रूप व्यक्त करता है। ग्रामोफोन के रेकार्ड पर कुछ रेखाएँ मात्र होती हैं।, जो आँखों से नहीं दीखतीं। इन्हीं रेखाओं पर सूई घूमती है तो शब्द उत्पन्न होता है। ये रेखाएँ गाने वाले के शब्द के कम्पन से रेकार्ड पर बनी हैं।

वर्षों पहले 'कल्याण' में कभी छपा था कि फ्रान्स में किसी ने एक ऐसा यन्त्र बनाया था कि उसके सम्मुख कोई गीत या स्तुति गाने पर यन्त्र में लगे पर्दे पर रखे रेत के कण उछलकर एक आकृति बना देते थे। एक भारतीय सज्जन ने जब उस यन्त्र के सम्मुख कालभैरव की स्तुति गायी तो यन्त्र के पर्दे पर रेत के कणों से कालभैरव का रूप बन गया।

शब्द से कम्पन होता है। सृष्टि के सब पदार्थ कम्पन से बनते-बिगड़ते हैं, यह भी विज्ञान मानता है। इसलिये मन्त्रों की शक्ति को

समझना कठिन नहीं होना चाहिये। किन्तु शब्दों में क्या शक्ति है, यह सर्वज्ञ ऋषि जानते थे। उन्होनें ऐसे शब्दों की योजना की तथा उनके प्रयोग की ऐसी विधि निश्चित की, जिससे उन मन्त्रों को निर्दिष्ट विधि से काम में लेकर अभीष्ट फल प्राप्त किया जा सके। इनमें वेद, पुराण तथा तन्त्रों के बहुत-से मन्त्र ऐसे हैं, जिनके प्रयोग में पर्याप्त सावधानी आवश्यक है। सविधि करने पर ही वे फल देते हैं। थोड़ी-सी त्रुटि हो तो अनुष्ठान निष्फल हो जाता है अथवा देवता उग्र हों तो अनुष्ठान उलटा दुष्प्रभाव भी दिखला सकता है। कुछ शाबर-मन्त्र ऐसे हैं, जो उच्चारण मात्र से अपना प्रभाव प्रकट करते हैं। इन्हें उज्जीवित करने के लिये बहुत थोड़ी प्रक्रिया आवश्यक होती है।

शाबर मन्त्रों की वर्ण-योजना प्राय: बड़ी अटपटी होती है। उनका कोई अर्थ हो ही, यह आवश्यक नहीं है। फिर भी उनका प्रभाव तो प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

अभीष्ठ शाबर-मन्त्र

दीपावली या होली की रात्रि अथवा ग्रहण काल में उस का निर्दिष्ट संख्या के अनुसार जप करने तथा विधिपूर्वक होमादि करने से सिद्ध होता है। तत्पश्चात् उसका नित्य जप करना चाहिये। जहाँ मन्त्र की जप संख्या निर्दिष्ट न हो, वहाँ उसका 108 या 1008 बार जप कर लेना चाहिये। शाबर मन्त्रों की प्रयोग विधि यद्यपि ग्रन्थों में मिलती है, तथापि उनके सम्बन्ध में गुरू-मुख से जानकारी प्राप्त कर लेना ही अधिक अच्छा है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में कहा है कि कलियुग में जीवों के कष्ट को देखकर उसे दूर करने के लिये जग-हित की करुणकामना से प्रेरित होकर श्रीउमा-महेश्वर ने इन शाबर-मन्त्रों की सृष्टि की। यद्यपि इन मन्त्रों के अक्षर भी अनमिल होते हैं तथा इनका कोई अर्थ भी नहीं होता, तथापि महेश के प्रताप से ये मन्त्र तत्काल अपना

चमत्कारिक फल प्रकट कर देते हैं-

कलि बिलोकि जगहित हर गिरिजा। साबर मंत्रजाल जिन्ह सिरिजा।

अनमिल आखर अरथ न जापू। प्रगट प्रभाव महेस प्रतापू।

शाबर-मन्त्र ध्वनिप्रधान होते हैं तथा इनमें निहित देवशक्ति, गुरूशक्ति एवं मन्त्रशक्ति ही उच्चारण मात्र से अभिव्यक्त होकर अपना प्रभाव दिखलाती है।

शाबर-मन्त्रों में रोग, पीड़ा आदि को सचेतन सूक्ष्म व्यक्तित्व से युक्त मानकर उनसे पीड़ित व्यक्ति को छोड़कर चले जाने की प्रार्थना की गयी है या देवता अथवा गुरू के आदेश से उन्हें जाने को कहा गया है।

श्री हनुमान चिरंजीवी हैं तथा उनकी शक्ति सर्वत्र वायु-प्रवाह के समान व्याप्त है। अतः श्री हनुमान जी के शाबर-मन्त्रों का संग्रह यहाँ लोक कल्याण की कामना से प्रस्तुत किया जाता है -

1. सिर-पीड़ा दूर करने के लिये-

लंका में बैठ के माथ हिलावे हनुमंत।
सो देखिके राक्षसगण पराय दूरंत।।
बैठी सीता देवी अशोक वन में।
देखि हनुमान को आनन्द भई मन में।।
गई उर विषाद देवी स्थिर दरशाय।
'अमुक' के सिर व्यथा पराय।।
'अमुक' के नहीं कछु पीर नहिं कछु भार।
आदेश कामाख्या हरिदासी चण्डी की दोहाई।।

सिर की पीड़ा से पीड़ित व्यक्ति को दक्षिण की ओर मुख करके बैठा दे। सिर को हाथ से पकड़कर मन्त्रोच्चरण करते हुए झाड़े। 'अमुक' के स्थान पर रोगी का नाम ले ले।

2. आधासीसी दूर करने के लिये-

(1) बन में ब्याई अंजनी कच्चे वनफल खाय। हाँक मारी हनुवंत ने इस पिंड से आधासीसी उतर जाय।।

(2) ॐ नमो वन में ब्याई बानरी उछल वृक्ष पै जाय।
कूद कूद शाखानरी, कच्चे वनफल खाय।।
आधा तोड़े आधा फोड़े, आधा देय गिराय।
हंकारत हनुमान जी, आधासीसी जाय।।

किसी एक मन्त्र का उच्चारण करते हुए भस्म से झाड़े।

3. नेत्ररोग-शमन करने के लिये-

ॐ नमो बने बिआई बानरी जहाँ जहाँ हनुवन्त आँख पीड़ा कषावरि गिहिया धनै लाइ चरिउ जाइ भस्मन्तन गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

आँख पर हाथ फेरते हुए सात बार मन्त्र पढ़कर फूँके। व्यथा मिट जायेगी।

4. कर्णमूल-पीड़ा दूर करने के लिये-

वनरा गाँठि वानरी तो डाँटे हनुमान कंठ।
बिकारी बाधी थनैली कर्णमूल सम जाइ।
श्रीरामचन्द्र की वानी पानी पथ होइ जाइ।।

विभूति से सात बार झाड़ने से कर्णरोग नष्ट होता है।

5. बिच्छू का विष झाड़ने के लिये -

1) पर्वत ऊपर सुरही गाइ। कारी गाइकी चमरी पूछी। तेकरे गोबरे विछी बिआइ। बिछी तोरे कर अठारह जाति। छ कारी छ पीअरी छ भूमाधारी छ रत्नपवारी। छ कुं हुं कुं हुं छारि। उतरु बिछी हाड-हाड पोर-पोर ते। कस मारे लीलकंठ गरमोर महादेव को दुहाई गौरा पार्वती को दुहाई अनीत टेहरी शडार बन छाइ उतरहिं बीछी हनुमंत की आज्ञा दुहाई हनुमंत की।

2) ॐ हरिमर्कटमर्कटाय स्वाहा।।

मंगलवार को एक लाख जप तथा दशांश हवन करने से सिद्धि होती है।

6. अण्डवृद्धिरोग दूर करने तथा सर्पनिवारण के लिये -

ॐ नमो आदेश गुरू को जैसे के लेहु रामचन्द्र कबूत ओसई करहु राध बिनि कबूत पवनपूत हनुमंत धाउ हर-हर रावन कूट मिरावन श्रवइ अण्ड खेतहि श्रवइ अण्ड-अण्ड विहण्ड खेतहि श्रवइ वाजं गर्भ हि श्रवइ स्त्री पीलहि श्रवइ शाप हर हर जंबीर हर जंबीर हर हर हर।।

मन्त्र पढ़कर फूले हुए अण्डकोश को हलके हाथ से मले तथा अभिमन्त्रित जल को पिलाये तो अण्डवृद्धि शान्त हो जाती है। मिट्टी के एक ढेले को इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर साँप के बिल पर रखने से साँप निकल जाता है।

7. भूत-प्रेत दूर करने के लिये -

बाँधो भूत जहाँ तु उपजी छाड़ो गिरे पर्वत चढ़ाइ सर्ग दुहेली तुजभि झिलिमिलाहि हुँकारे हनुवन्त पचारइ भीमा जरि जारि-जारि भस्म करे जाँ चापें सींउ।।

8. चूहा दूर करने के लिये-

पीत पीताम्बर मूशा गाँधी। ले जाइहु हनुवन्त तु बाँधी।। ए हनुवंत लंका के राउ एहि कोणे पैसे हु एहि कोणे जाऊ।।

स्नान करके हल्दी के पाँच गाँठ और अक्षत को लेकर इस मन्त्र को पढ़कर जहाँ चूहा आता हो, वहाँ घर या खेत में डाल दें। इससे चूहा भाग जाता है।

9. सूअर और चूहा दूर करने के लिये -

हनुवंत धावति उदरहि ल्यावे बाँधि अब खेत खाय सूअर और घर माँ रहे मूस खेत घर छँडि बाहर भूमि जाइ दोहाइ हनुमान की जो अब खेत मंह सूअर घर मंह मूस जाइ।।

प्रयोगविधि - संख्या 8 में बतायी हुई विधि के अनुसार।

10. शरीर-रक्षा करने के लिये -

ॐ नमः बज्रका कोठा जिसमें पिंड हमारा पैठा ईश्वर कुंजी ब्रह्म का ताला मेरे आठो यामका यती हनुवन्त रखवाला।।

इस मन्त्र का एक हजार बार जप करने से सिद्धि होती है। इसके बाद इस मन्त्र के तीन बार उच्चारण मात्र से कार्यसिद्धि होती है।

11. अर्शरोग-निवारण के लिये -

ॐ काकाकता क्रोरी कर्त्ता ॐ करता से होय यरसना दश हंस प्रकटे खूनी बादी बवासीर न होय। मंत्र जानके न बतावे द्वादश ब्रह्म

हत्या का पाप होय। लाख जप करे तो उसके वश में न होय शब्द साँचा पिंड काँचा तो हनुमान का मंत्र साँचा फुरों मंत्र ईश्वरो वाचा।।

रात्रि के रखे हुए जल को इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके शौच-समय गुदा का प्रक्षालन करे तो बवासीर नष्ट हो जाती है। एक लाख जप करने वाले को जीवन में कभी बवासीर होती ही नहीं है।

12. पीलियारोग - निवारण के लिये -

ॐ नमो वीर वैताल असराल नारसिंहदेव खादी तुषार्दी पीलिया कूं भिदाती कारै झारै पीलिया रहै न नेक निशान जो कहीं रह जाय तो हनुमंत की आन मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।।

13. दाँत का कीड़ा झाड़ने के लिये -

ॐ नमो आदेश गुरूको वनमें ब्याई अंजनी जिन जाया हनुमंत कीड़ा मकड़ा माकड़ा ए तीनों भस्मन्त, गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र के एक लाख जप से सिद्धि होती है। जप का आरम्भ दीपावली की रात्रि से करना चाहिये। मन्त्र सिद्धि होने पर नीम की डाली से झाड़ने पर उसी क्षण पीड़ा नष्ट हो जाती है। मन्त्रोच्चारण के साथ कागज या बाँस की नाली से कीड़े वाले दाँत को कटेरी के बीजों का धूआँ देने से कीड़े गिर जाते हैं।

14. नेत्ररोग-शमन करने के लिये -

ॐ झलमल जहर भरी तलाई अस्ताचल पर्वत से आई जहाँ बैठा हनुमंता जाई फूटै न पाकै करै न पीला जती हनुमंत हरे पीड़ा मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरूको।।

इस मन्त्र की सिद्ध कर 11 बार उच्चारण करते हुए नीम की डाली से झाड़े। लगातार तीन दिन झाड़ने से नेत्र रोग एवं पीड़ा का शमन हो जाता है।

15. अग्नि-बन्ध करने के लिये -

अज्ञान बाँधो विज्ञान बांधो घोरा घाट आठ कोटि वैसंदर बांधो अस्त हमारा भाइ आन हि देखें झझके मोहिं देखे बुझाइ हनुवन्त बांधो पाना होइ जाय अग्नि भवेत के जसमत्ती हाथी होइ वैसंदर बाँधो नारायण साखि मोरी गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

साधक पाठक इनमें से एक या अनेक मन्त्रों की अपने प्रयोजन के अनुसार साधना कर श्रीहनुमान जी की कृपा से अपनी कामना सिद्ध करें।

सहायक ग्रन्थ - कल्याण (गीता प्रेस, गोरखपुर)

संस्मरण

संस्मरण

नैष्ठिक ब्रह्मचारी केशवानन्द जी महाराज

आप आध्यात्मिक ज्ञान भक्ति एवं कर्मनिष्ठा के मूर्तिमान स्वरूप परमपूज्य **ब्रह्मलीन स्वामी श्री रामधारी जी महाराज** के प्रतिभावान् शिष्य हैं। उन्हीं के प्रसाद से आपने अन्त: चेतना में भक्ति और वाह्य जीवन में कर्मयोग की लोक-हितकारी सेवा को जीवन का लक्ष्य बनाया है।

आप **''श्री राम आध्यात्मिक प्रन्यास''** में संस्थापक होने के साथ-साथ हनुमद्धाम के सर्वोन्मुखी विकास के कुशल निर्देशक एवं प्राणवन्त संचालक हैं।

'सर्वभूतहिते रता:' के उपासक के रूप में जन-कल्याण के लिए आपका समर्पित जीवन हनुमद्धाम में विविध रूपों में उजागर हो रहा है जिसमें हनुमत् रसोई (अन्नक्षेत्र), गौ सेवा सम्वर्धन-रक्षण एवं साधु-संत सेवा में अहर्निश संलग्न रहना कर्मठता, सेवा भावना एवं प्रेम का जीवन्त उदाहरण हैं।

जाति, वर्ग, पंथ के लौकिक बन्धनों से विरत रहकर मूक तपस्वी की भाँति लोक कल्याण में निरत रहना आपका ध्येय और हनुमद्धाम में आये हुए आगन्तुकों को श्री हनुमद् चरण सन्निधान में प्रीति प्राप्त हेतु श्रेय भावी मार्ग एवं जन कल्याण भावी लोगों को प्रेय (लौकिक) मार्ग प्रशस्त एवं सुलभ कराना लक्ष्य है। जो नि:स्वार्थ मानव सेवा का प्रतीक है।